www.thearyasamaj.org

ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

नवम्बर, 2013

'स्वामी दयानन्द बहुत बड़े समाज-संस्कर्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा समयानुकूल भाष्यकर्ता और आर्य संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे। मैं स्वामीजी की विद्वता और उनके कार्य-कलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक चिह्न समझता हूँ। उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रहकर मेरी आत्मा को बल तथा मेरे बैठने के कमरे को शोभा का दान देता है।

धन्यं च प्राज्ञमूर्धन्यं दयानन्द दयाधनम्।
स्वामिनं तमहं वन्दे बारं-बारं च सादरम्।।'

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

₹10

www.thearyasamaj.org

दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित जूनियर एडिटर-II प्रतियोगिता में राष्ट्रीय विजेता प्रतिष्ठा आर्या सचिन तेंदुलकर के साथ। साथ में आस्था आर्या व राज्य स्तर पर पुरस्कृत अन्य बच्चे।

दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित जूनियर एडिटर-II प्रतियोगिता में राष्ट्रीय विजेता प्रतिष्ठा आर्या व राज्य स्तरीय विजेता प्रतिभा आर्या प्रीति शर्मा व राहुल नैन (इण्डस पब्लिक स्कूल, जीन्द) को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए दैनिक भास्कर टीम व प्राचार्या श्रीमती अरूणा शर्मा।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

नवम्बर, २०१३

वर्ष : १५ अंक : १० भाद्रप्रद २०७०
सृष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९९-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०९४१९२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१००.०० रु०
आजीवन	:	१०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१९२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

हमारे शरीर में तेज बहने वाली लहू की धारा हो, और उस लहू की धारा में बलि की लालसा हो। वैसे ही हमारे बदन लोहे के हों और उसी तरह लोहे की हो हमारी इच्छा शक्ति। इस योग्यता के साथ हम एक राष्ट्र क्या सारी पृथ्वी को भयमुक्त कर सकते हैं। –लाला लाजपतराय

क्या? कहाँ?....

आलेख

एक दीपक क्या कह गया!	९
हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो	१०
पवित्र दिन पर यह पाप क्यों?	१२
महर्षि दयानन्द की देन	१४
प्रत्येक मनुष्य को अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए।	१६
गृहस्थाश्रम की महिमा/स्त्रियों का धर्मगुरु	१८
नारी के प्रति अपराध : मानवता पर कलंक	१९
क्षमा वीर पुरुषों का लक्षण है	२१
यम नियम से समाधि की ओर (सन्ध्या रहस्य)	२२
गिलोय अमृता का दूसरा नाम	२४
कब तक चलेगा विघटन का यह खेल (अन्ततः)	३४

कहानी/प्रसंग : सीख हम सीखें युगों से-८, संगति का प्रभाव-२७, खुशी मिलती है-२७, प्रेरक प्रसंग- बुद्धिमान कौन- २८, वही मिलता है-२८
कविताएँ- २०, २७
स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, अनुशीलन, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, बाल वाटिका २६, भजनावली २६ समाचार सूचनाएँ,

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

**दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत्।
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत्।।९४।।**

धारणकर्ता ब्रह्मदेव को यदि सब निज दिल में धारें।
स्तुति गाएँ उसको ही जानें तो जग में न कभी हारें।।
जैसे शकटचक्र[1] का घेरा उसके चारों ओर रहे।
वैसे प्रभु भी काव्यरूप[2] सब जग के चारों ओर रहे।।

१ गाड़ी का पहिया २ प्रभु कवि हैं, उनका बनाया जगत् काव्य है।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

www.thearyasamaj.org

दीपमाला का जीवन-दर्शन

❒ चन्द्रभानु आर्य

पर्व या त्योहार किसी भी संस्कृति के प्रतिबिम्ब होते हैं। केवल भारतीय उत्सवों की परम्परा है कि वे केवल मनोरंजन के लिए नहीं मनाए जाते बल्कि उनका मनुष्य जीवन के उत्थान और सामाजिक ताने-बाने को मजबूत बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। विशुद्ध मनोरंजन में नशा होता है-- यह अयथार्थ होता है। इसमें कुछ क्षणों के लिए ही सही, जीवन की वास्तविकताओं को भुलाने का प्रयास किया जाता है, उससे आँखें मूंदी जाती हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति इस प्रकार के मनोरंजन से संतुष्ट नहीं हो सकता। उसे तो समस्याओं के समाधान में ही आनन्द आता है या इस प्रकार की व्यवस्था करने में आनन्द आता है, जिससे समस्याएँ उत्पन्न ही न हों। यह आंनन्द ही उसके मन को प्रमोद देता है, यही वास्तविक मनोरंजन है।

वैदिक पर्व दीपावली थक हार कर विश्रान्ति करने का उत्सव नहीं है जैसा कि कुछ विदेशी विचारक प्रचारित करते हैं। यह विशुद्ध योजनाबद्ध वैदिक पर्व है जो समयानुकूल है और इसमें एक पूरा जीवन दर्शन समाया हुआ है। यह दर्शन जीवन की यथार्थ व्याख्या करता है और जीवन को सार्थक बनाने के लिए सफल मार्गदर्शन करता है।

इस जीवन दर्शन का मूल है कि यह जीवन केवल इतना सा ही नहीं है जितना कि दिखता है। इससे पहले भी जीवन था और इसके आगे भी जीवन है। यह तो अनन्त जीवन का एक सोपान है। इसलिए जीवन का उद्देश्य केवल खाना पीना और सो जाना भर नहीं है बल्कि इस जीवन को आनन्दपूर्वक जीते हुए भी आगामी जीवन की तैयारी करना है। निःश्रेयस् यानि आगामी जीवन की तैयारी करने के साथ साथ अभ्युदय इस जीवन का अनिवार्य अंग है। यानि परलोक की तैयारी करने की प्रेरणा देता हुआ भी यह दर्शन इस जीवन से पलायन की शिक्षा नहीं देता, बल्कि इस जीवन से भी सर्वश्रेष्ठ ग्रहण करने की प्रेरणा देता है। अभ्युदय अर्थात् इस जीवन में सब प्रकार की उन्नति। समाज में ऊँचा नाम हो, खूब धन-सम्पत्ति हो-- इस बात को तो प्रायः प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य समझता है पर इस उन्नति का उपाय क्या है जो यह आनन्द भी दे और निःश्रेयस् में बाधा भी न बने? यह रहस्य की बात है और इसे केवल वैदिक संस्कृति के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

यह दीपावली पर्व यही समझाता है। इसे समृद्धि का त्योहार कहते हैं। कुछ विद्वान तो इसे वैश्यों का पर्व भी कहते हैं। माने इसका संबंध धन्य-धान्य-- समृद्धि से है। समृद्धि और सम्पदा के बारे में इस पर्व की परम्पराएँ बता रही हैं कि सम्पदाएँ कैसे प्राप्त की जाती हैं, उनका सदुपयोग कैसे किया जाता है और उनकी रक्षा कैसे की जाती है। इस पर्व के अवसर पर एक फसल प्राप्त होती है। उसे बांटने की परम्परा आज भी विकृत रूप में ही सही, बची हुई है। इस पर्व की परम्परा का मूल इसके नाम में है। इसका मूल नाम है नव सस्येष्टि! यानि नई फसल की इष्टि। यह इष्टि शब्द बड़ा सारगर्भित है। जैसे हम और आप इष्ट शब्द का प्रयोग करते हैं। इष्ट अर्थात् जो हम चाहते हैं। हम अन्न-धन चाहते हैं। तो क्या करें? यह इष्टि का दूसरा अर्थ है- यानि यज्ञ। जो प्राप्त करना चाहते हो उसका यज्ञ करो। जो लेना चाहते हो वह दे डालो। जो प्राप्त किया है वह ईश्वर की कृपा से प्राप्त किया है। तुमने उसकी पात्रता प्राप्त की तो ईश्वर ने तुम्हें दिया। अब उस पात्रता को बनाए रखना है तो उसे यज्ञशेष की भांति प्रयोग करो। संगतिकरण यज्ञ का एक अर्थ है। इस संसार में यज्ञ हो रहा है, इसका अर्थ है कि संगतिकरण हो रहा है। माने जो तुमने प्राप्त किया है और तुम सोच रहे हो कि मैंने अपने कारण प्राप्त किया है तो थोड़ा विचार करो। संगतिकरण के बिना एक दाना भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। हमारे अन्न में कीट पतंगों से लेकर पशुपक्षियों का, प्रकृति के हवा-पानी सूर्य का, हमारे मित्रों बंधुओं का सबका योगदान है। इन्होंने यज्ञ किया तो हमें प्राप्त हुआ। इनके यज्ञ से हम पुष्ट हुए। अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम यज्ञ करें और इनको पुष्ट करें। इन्होंने यज्ञ किया तो इनका कुछ घटा नहीं। हम यज्ञ करेंगे तो हमारा भी लाभ ही होगा। हम इष्टि करेंगे तो इष्ट पाएँगे। इष्टि नहीं करेंगे तो अनिष्ट ही होगा जैसा कि हो रहा है।

हम इस ब्रह्माण्ड के अंग हैं और यह ब्रह्माण्ड हमारा शरीर है। जगत् के जड़-चेतन देवताओं को पुष्टि देना जीवन में अभ्युदय प्राप्त करने का उपाय है। अभ्युदय का अर्थ ही यह है कि सारे संसार के पदार्थ हमें सुख दें। जड़ पदार्थों के संबंध में- जब हम इन्हें शुद्ध रखेंगे; और चेतन के संदर्भ में जब हम इन्हें अपना मित्र बनाएँगे तभी हमारा अभ्युदय होगा। हमारा परिवार, हमारा समाज, हमारा गांव, हमारा देश सुखी होगा तभी तो हम सुखी होंगे। यही दीवाली का दर्शन है कि दूसरों का उपकार करना वस्तुतः अपना उपकार करना ही है।

www.thearyasamaj.org

आपकी सम्मतियाँ

मुझे यह जानकार अत्यन्त प्रसन्नता का आभास हो रहा है कि यह मासिक पत्रिका प्रभु की वेद वाणी और महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करके प्राणिमात्र का कल्याण कर रही है। मैं इसकी सफलता और उज्ज्वल भविष्य की प्रभु से प्रार्थना करता हूँ। इसके संपादक वर्ग का विशेष धन्यवादी हूँ और आभार प्रकट करता हूँ कि वैदिक ज्ञान की इस पत्रिका से अनेक बहिन, भाई लाभान्वित होकर विश्व कल्याण और शांति की पहल से प्रभावित होकर अपने जीवन का भी निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे।

हरिश्चन्द्र स्नेही

2190, सैक्टर-12, पार्ट-1, सोनीपत-131001

शांतिधर्मी का सितम्बर अंक प्राप्त हुआ। सम्पादकीय 'चरित्र का आदर्श' झिंझोड़ने वाला है। इसमें भारत के महान- चरित्रवान श्रेष्ठ पुरुषों के शुद्ध चरित्र के शानदार उदाहरणों पर प्रकाश डाला गया है। हम शिवाजी, महाराणा प्रताप, स्वामी दयानन्द आदि को उनके सद्गुणों तथा सच्चरित्र के लिए ही याद करते हैं। ब्रह्मचर्य, आत्मसंयम, तप तथा सात्त्विक प्रवृत्ति हमारे देश के वीरों की परम्परा रही है। हम दूसरे की पुत्री तथा पत्नी को अपनी बहन तथा बेटी की तरह पूजते रहे हैं। पर बड़े अफसोस की बात है कि आज मनुष्य वासना का गुलाम बनकर रह गया है। पहले हमारी शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र निर्माण था, आज हमारे धर्मगुरु और शिक्षक ही चरित्रहीनता का शिकार हो रहे हैं। चरित्र की शिक्षा न होने के कारण हमारा आर्यावर्त देश रसातल की ओर जा रहा है। यदि हम भारत को पुन: विश्व गुरु बनाना चाहते हैं तो हमें चरित्र के आदर्श को अपनाना ही होगा। डॉ0 वेदप्रताप वैदिक का लेख प्रेरणादायक है। डॉ0 चन्द्रशेखर लोखण्डे ने देश के शक्तिशाली होकर भी कमजोर होने के कारणों पर बखूबी प्रकाश डाला है। रामफलसिंह आर्य ईश्वर के न मानने से होने वाले अनर्थों पर सफल प्रकाश डालते हैं। मेरे विचार से जो कोई ईश्वर को न माने तो वह कृतघ्न, स्वार्थी, बेवकूफ तथा पागल है। बालवाटिका ज्ञानवर्धक तथा मनोरंजक है। डॉ0 विवेक आर्य के प्रेरक प्रसंग रुचिकर हैं। पूज्य श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक को उनकी पुस्तक 'भजन-भास्कर' के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई तथा शुभ कामनाएँ।

प्रो0 शामलाल कौशल

975-बी/20, ग्रीन रोड, रोहतक-124001

शांतिधर्मी पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। परिवार के सभी सदस्यों को इसे पढ़कर आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। शांतिधर्मी में परिवार के सभी सदस्यों के लिए पठनीय और प्रेरणादायक पाठ्यसामग्री होती है। इतिहास के गूढ़-गंभीर रहस्यों से लेकर बालवाटिका के हास्यम् तक-- शुरु से अन्त तक रोचकता और प्रवाह बना रहता है। शांतिधर्मी वास्तव में ही परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक है। आपका और सम्पूर्ण सम्पादक मण्डल का समर्पण स्तुत्य है।

सेवासिंह वर्मा

पूठ खुर्द, नई दिल्ली-49

अक्तूबर अंक के मुखपृष्ठ ने हमेशा की तरह प्रभावित किया। मुखपृष्ठ का चित्र और डॉ0 प्रभाकर शुक्ल की पंक्तियाँ जीवन में आशावादिता का संदेश देती हैं। छत्रपति शिवाजी के बारे में डॉ0 विवेक आर्य जी ने नवीन जानकारियाँ दी हैं। भारत के इतिहास के नायकों को धर्मनिरपेक्षता की आड़ में उपेक्षित करना आज के कथित इतिहासकारों का फैशन बन गया है। लेखक ने लोगों की आँख खोलने का काम किया है। इस अंक में रामफल सिंह आर्य की कहानी मर्मस्पर्शी है। एक सैनिक के साथ साथ उसका परिवार भी देश के लिए बराबर का त्याग और समर्पण करता है।

रोहतास भारद्वाज

995, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, जींद-126102

शांतिधर्मी गागर में सागर है। इतने छोटे से कलेवर में इतनी विचारपूर्ण सामग्री की प्रस्तुति वास्तव में सम्पादन कला है। पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ और प्रेरक प्रसंग नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में बहुत बड़ा योगदान कर रहे हैं। शांतिधर्मी की बेसबरी से प्रतीक्षा रहती है।

अमित सोनी,

बस स्टैण्ड कोटपुतली, जिला अलवर, राजस्थान

www.thearyasamaj.org

गायत्री छन्दः । षड्ज स्वरः

लचकीला शिष्य

पं० चमूपति जी

उपोषु जातमप्तुरः गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्।
इन्दुं देवा अयासिषुः।।१।।

ऋषिः -अमहीयुः = पृथिवी की नहीं, द्युलोक की उड़ान लेने वाला

(देवाः) दिव्य-स्वभाव मनुष्यों ने (गोभिः परिष्कृतम्) उपदेशों द्वारा परिष्कृत (सुजातम्) सुधारे संवारे गए; उत्तम कुल-जात (अप्तुरम्) जल की तरह लचकीले (इन्दुम्) रसीले (भङ्गम्) विनयभाव को (अ उप अयासिषु) निकट जा जा कर प्राप्त कर ही लिया।

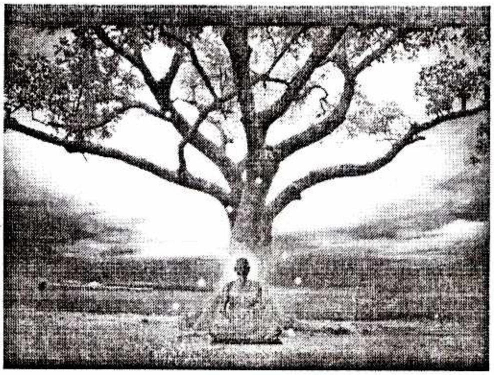

मनुष्य विनय से देव बनता है। वह विद्या विद्या नहीं, जिससे विद्यार्थी का स्वभाव विनीत न हो। पुस्तकों के पाठ से मानसिक ज्ञान तो मिल सकता है परन्तु शील की शिक्षा शिष्ट पुरुषों के सत्संग से ही मिलती है। उन्हें उठते बैठते देखने से, उनके उपदेशामृत का पान करने से, उनकी डांट डपट सहने से शिष्य सुजात=सुघड़ बनता है। उस में कुलीनता आती है। प्राचीन समय में गुरुकुलों की स्थापना इसीलिए की गई थी कि विद्यार्थियों में कुलीनता आए। वे गुरुओं के कुल में रहें। कुल की मर्यादा सीखें। उनमें शिष्टता हो। यही उनका दूसरा जन्म है।

सूखा काठ झुकता नहीं। उसमें लचक का अभाव रहता है। वह हठ का, ऐंठ का, घमण्ड का प्रतिनिधि होता है। इसके विपरीत जल। इसमें रस है, कोमलता है। यह पात्र के अनुकूल ही अपनी आकृति बना लेता है। जहाँ उठना उचित होता है वहाँ उठ जाता है जहाँ बैठना आवश्यक है, बैठ जाता है। ये उतार चढ़ाव विनीत प्रकृति के गुण हैं। वास्तव में जीवन नाम ही लचक का है, सौम्यता का है।

बिना विनय के विद्या रूखी है। उसमें रस नहीं। वह मृत है, उसमें जीवन नहीं। जल सौम्य होता है। ऐसे ही शिष्ट जनों के चरणों में बैठ चुका कोई विनीत शिष्य।

विनय की प्राप्ति बार बार गुरुजनों के निकट जाने से-उनकी प्रयत्नपूर्वक सेवा करने से होती है।

प्रभु का भक्त विनय का पुतला होता है। वह प्रभु की प्रजा से प्यार करता है। उसके स्वभाव में ही मिठास रहती है। क्रोध, अभिमान, ईर्ष्या, द्वेष उसके पास फटकते तक नहीं। फल से लदी हुई शाखा के समान वह सदैव नीचे को झुकता है। वह उपकार करता है और उससे तृप्त नहीं होता। इस अतृप्ति से वह सदैव विनम्र सा-लज्जित सा रहता है।

दिल कहता है-अभी कर्त्तव्य पूरा नहीं हुआ। सर्वस्व समर्पण करने पर भी जी यही चाहता है कि कुछ और अर्पण करूँ। रहीम ने कहा है-

देने वाला और है देता है दिन रैन।
लोग मुझे दानी कहैं इससे नीचे नैन।।

www.thearyasamaj.org

चाणक्य-नीति

पंचमोऽध्यायः

जन्ममृत्यू हि यात्येको भुनक्त्येकः शुभाशुभम्।
नरकेषु पतत्येकः एको याति परां गतिम्।।१३।।

जीव अकेला ही जन्म और मृत्यु को प्राप्त होता है। अकेला ही शुभ-अशुभ कर्मों के फलों को भोगता है। अकेला ही महादु:खों को प्राप्त करता है और अकेला ही परम गति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है। भाव यह है कि संसार के संबंध और संपत्ति तभी तक हैं जब तक शरीर है। मनुष्य को आत्म उन्नति के लिए निरन्तर पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

तृणं ब्रह्मविदः स्वर्गस्तृणं शूरस्य जीवितम्।
जिताऽक्षस्य तृणं नारी निःस्पृहस्य तृणं जगत्।।१४।।

जो ब्रह्म के आनन्द को जानता है वह संसार के बड़े से बड़े सुख को भी तिनके के समान समझता है। शूरवीर अपने जीवन को ही तिनके के समान समझता है अर्थात् बलिदान को तत्पर रहता है। जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है उसके लिए नारी में कोई आकर्षण नहीं है। जिसने अपनी सभी कामनाओं को जीत लिया है, उसे संसार का कोई भी आकर्षण अपने पथ से डिगा नहीं सकता।

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च।।१५।।

विदेश में विद्या ही मित्र होती है, विद्या के द्वारा हम अनेक मित्रों, सहयोगियों को प्राप्त कर सकते हैं। घर में पत्नी मित्र होती है, पत्नी के सहयोग के बिना घर नहीं चल सकता। रोगी व्यक्ति के लिए औषध=दवा ही मित्र होती है। मृत्यु के पश्चात् केवल धर्म ही साथ रहता है।

अमृत वचनावली

प्रीतिशतकम्

❑डॉ० रामभक्त लांगायन
आई ए एस (सेवानिवृत्त)

अन्तदृष्टिः स्थिरश्वासः पिबेन्नादमनाहतम्।
परमात्मसुरां पीत्वा मोक्षमार्गमनुसृतः।।८३।।

जिसकी आंखें अन्तर्मुखी हो गई हैं, कानों में अनहद नाद सुनना शुरू कर दिया है; सांस स्थिर हो गए हैं- ऐसे व्यक्ति ने परमात्मा रूपी शराब का पान किया है। वही मोक्ष का पात्र है।

लवणेन विना यद्वद् व्यञ्जनं गोमयायते।
नीरसं जीवनं तद्वद् परमात्मरसं विना।।८४।।

जैसे बिना नमक के भोजन स्वादिष्ट नहीं लगता, उसी प्रकार भगवान के भजन के बिना जीवन नीरस प्रतीत होने लगता है।

पापं, लौहं, विषं, मृत्युं पुण्यं हेमौषधामृते।
परिवर्तयितुं शक्तः कलापूर्णः स उच्यते।।८५।।

वहीं सच्चा कलाकार है जो पाप को पुण्य में बदल देता है; लोहे को सोने में बदल देता है, जहर को औषधि में बदल देता है और मृत्य को अमृत में बदल देता है।

जगदीशः सहायश्चेत् सर्वापदभ्यो सुरक्षति।
चन्द्रिकाधवलाकाशे किमन्यैर्दीपदीपनैः।।८६।।

जब परमेश्वर की कृपा हो तो मनुष्य सारी मुश्किलों को पार कर लेता है। चाँद की चाँदनी से चमकते हुए आकाश में किसी अन्य दीपक की आवश्यता नहीं होती।

प्रेम्णा प्रेममया जाताः प्रेम्णा पारं परं गताः।
प्रियप्रेमदृशा दृश्य प्रेमहीनैर्न दृश्यते।।८७।।

प्रेम से ही सब पैदा हुए हैं और प्रेम से ही संसार सागर से पार उतर जाएँगे। प्रेम रूपी आँख से ही उस परमात्मा के दर्शन किए जा सकते हैं।

www.thearyasamaj.org

सीख हम सीखें युगों से

❑डॉ० विवेक आर्य

आर्य भजनोपदेशकों की भूमिका

आर्यसमाज बदायुं का वार्षिक उत्सव हो रहा था। एक भजनोपदेशक ने भजन के साथ-साथ हुक्के पर एक टिप्पणी करते हुए एक लतीफा सुनाया। एक बूढ़े सज्जन हुक्का पी रहे थे। उन्हें खाँसी उठी। खाँसी के धक्के से कफ निकल कर हुक्के की नाल में चला गया। इतने ही में उनके एक मित्र आये और सलाम के बाद हुक्के का आतिथ्य स्वीकार करने लगे। पहले ही दम को खींचने पर हुक्के का कफ उनके मुँह में चला गया। तब थूकते हुए बोले। यह कैसा तम्बाकू है? सुन रही जनता थू-थू कहकर मुँह बनाने लगी।

श्रोताओं में से एक मुस्लमान सज्जन उठकर शीघ्र अपने घर को चल दिए और कुछ देर बाद वापिस आ गये। मिश्र जी ने पूछा आप क्यों उठ गये थे। मुस्लमान सज्जन बोले- हुक्का तोड़ने गया था। अब कभी हुक्का पियूँ तो हराम का खाऊँ। उन मुस्लमान सज्जन से मिश्रजी का खूब परिचय था। उसके बाद उन्होंने जीवन भर कभी हुक्का नहीं पिया।

आर्यसमाज के इतिहास में ऐसी सैंकड़ों घटनाएँ हैं जब भजनोपदेश सुनकर किसी ने हुक्का, किसी ने बीड़ी, किसी ने शराब, किसी ने माँसाहार छोड़ा।

(सन्दर्भ-आर्य मित्र पत्रिका, 25 जनवरी, 1951)

मेरे स्वर्गीय दादा जी ने महात्मा आनंद स्वामी जी के संपर्क से बीड़ी पीना आर्यसमाज में ही छोड़ा था एवं हवन की वेदी पर प्रतिज्ञा की थी जिसे जीवन भर निभाया।

कुछ सज्जन आर्यसमाज के उत्सव को व्यर्थ बर्बादी मानते हैं अथवा भजनोपदेशक आदि को इतना महत्व नहीं देते। वे यह भूल जाते हैं कि सभी श्रोताओं की रूचि एक समान नहीं होती। साधारण श्रोता, जिनकी संख्या अधिक होती है उन पर भजनोपदेश आदि का प्रभाव स्थानीय सरल भाषा में होने के कारण अधिक पड़ता है। आर्यसमाज के उत्सवों से उत्तम विचारों का प्रचार होने से चरित्र निर्माण होता है।

हुतात्मा सुखदेव के जीवन पर आर्यसमाज का प्रभाव

शहीद सुखदेव बड़े मेधावी थे। किसी परीक्षा में कभी अनुत्तीर्ण न हुए, वर्ष प्रतिवर्ष अच्छे नंबरों से पास होते गये। आपका स्वभाव बड़ा ही शांत और कोमल था, इसलिए आपके सहपाठी और शिक्षक सदैव आपका आदर करते थे और आपसे प्यार करते थे। कहते हैं, आपके स्वभाव पर आपकी माता के धार्मिक संस्कारों का विशेष प्रभाव पड़ा था। आपके स्वभाव में उदारता की भावना यथेष्ट थी। आप अपने सिद्धांतों में बड़े दृढ़ थे। जो दिल में समा जाती थी वह सारे संसार का विरोध करने पर भी छोड़ना नहीं चाहते थे। आप अपनी धुन के पक्के थे। सहपाठियों में जब किसी विषय को लेकर तर्क-वितर्क उपस्थित होता तो आप बड़ी दृढ़ता से अपना पक्ष समर्थन करते और अंत में आपकी अकाट्य युक्तियों के सामने प्रतिद्वंदी को मस्तक झुका देना पड़ता। आर्य परिवार में जन्म ग्रहण के कारण आपके विचारों पर आर्यसमाज का विशेष प्रभाव था। समाज के सत्संगों में आप बड़े उत्साह से भाग लिया करते थे। इसके सिवा हवन, योगाभ्यास और संध्या का भी शौक था।

बिस्मिल और अशफाक

दंगों के माहौल में हमें शहीद अशफाक उल्ला खान और रामप्रसाद बिस्मिल की दोस्ती को अवश्य याद करना चाहिए।

एक बार शहीद अशफाक उल्ला बहुत बीमार हो गए थे। वे बेहोशी की हालत में राम-राम पुकारने लगे। उनके घर वाले अचरज में आकर सोचने लगे कि एक मुस्लमान होते हुए भी वे राम राम क्यों पुकार रहे हैं? पास खड़ा एक मित्र इस रहस्य को समझ गया और रामप्रसाद बिस्मिल जी को बुला लाया जिनके आने से अशफाक जी शांत और स्वस्थ हो गए। उन दोनों की मित्रता में मत-मतान्तर का भेदभाव नहीं था। अशफाक रामप्रसाद को अपना गुरु मानते थे। जहाँ एक उद्देश्य होता है वहीं सच्ची एकता स्थापित हो सकती है।

एक बार कानपुर आर्यसमाज में बिस्मिल जी और अशफक जी कुछ मंत्रणा कर रहे थे। कुछ मुस्लिम दंगाइयों ने वहाँ हमला कर दिया। अशफाकुल्ला जी ने अपनी पिस्तौल निकाल कर उनकी तरफ करके चेतावनी देकर कहा कि रुक जाओ, यह आर्यसमाज मेरा घर है। अगर इसकी एक ईंट को भी नुकसान पहुँचा तो आज तुममें से कोई जिन्दा नहीं बचेगा। दंगाई डर कर वापिस भाग गए।

धन्य है वह माँ जिनकी कोख से अशफाक जैसे देशभक्त पैदा हुए जिनके लिए देशसेवा सर्वोपरि थी।

www.thearyasamaj.org

एक दीपक क्या कह गया

सूर्यदेव अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। जीवन का एक और बहुमूल्य दिन बीत गया। अब तो संन्ध्या ही शेष है और संन्ध्या के बाद गहरी अंधेरी रात! अंधेरा स्वभाव से धीरे धीरे बढ़ता जाता है और सारी दुनिया पर ही छा जाता है, ठीक इसी प्रकार घोर निराशा का भाव भी बढ़ता जाता है। रोग ने केवल बाहर से नहीं, मानो अन्दर से भी सारे शरीर को जकड़ लिया है। पूछने पर एक सहायक ने बोध कराया कि आज कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या है। ओह! अंधकार की पराकाष्ठा ने शरीर की पीड़ा की पराकाष्ठा को जन्म दे दिया है। मानो वेद विद्या का महान् सूर्य भी आज उस तृतीय लोक में जाने को आतुर हो, जहाँ सांसारिक दु:ख से रहित, नित्य आनन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् देव लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं। मानो सूर्य अपने आप को एक छोटे से मिट्टी के दीये के रूप में परिवर्तित करना चाह रहा हो। ताकि वह दीया आगे आने वाले समय में स्वयं ही नहीं बल्कि लाखों सहस्रों दीयों को ज्योतिर्मय कर अविद्या अंधकार को सदा सदा के लिए इस धराधाम से दूर करदे। निश्चित ही उस दीये के बलिदान से लाखों सहस्रों दीये प्रज्वलित हो गए।

मनुष्य का जीवन भी तो एक दीये के समान ही है। उसमें मिट्टी भी है, तेल भी और जोत भी। मानो यह जड़ और चेतन का एक अद्भुत संगम ही है। हमारा शरीर मिट्टी का दीया है, उसमें प्रभु प्रदत्त प्राण तेल के समान है, लौ(अग्नि शिखा) जीवनी शक्ति है। तेल व लौ की सहायता से जो ज्योति उत्पन्न हो रही है, उस प्रकाश को निरन्तर बनाए रखने वाला ही हमारा चेतन तत्त्व आत्मा है। जब तेल समाप्त हो जाता है तो यह जड़ शरीर भी चेतन आत्मा के छोड़ जाने से प्राणहीन (मृत) केवल मिट्टी ही रह जाता है। यदि जीवन में हमने केवल जड़ की ही उपासना की तो मानो यह जीवन निरर्थक ही चला गया। अतः प्राण शक्ति और आत्मज्योति की ओर भी हमारा ध्यान होना चाहिए। आत्म ज्योति पर ध्यान केन्द्रित करते ही सारा संसार परिवर्तित हो जाएगा। दृष्टि बदली तो सृष्टि स्वयमेव बदल जाएगी और जीवन सार्थक हो जाएगा। वैसे भी दीये की लौ (अग्निशिखा) निरन्तर ऊपर की ओर ही उठती रहती है। मानो अपने परमधाम को ढूंढने सदा ऊपर को ही भागती जाती है। हमारी चेतना की अभीप्सा भी ऊर्ध्वा हो है। जड़ शरीर की सभी आवश्यकताएँ पूरी होने के बाद भी जीवन में परमध्येय परमपिता परमात्मा से मिलने की लालसा बनी रहती है। अतः मिट्टी के दीये इस तेल रूपी प्राण की सहायता से चेतन आत्मज्योति के प्रकाश में ही मानो उस परमज्योति परमात्मा का, जिसकी ज्योति दिन रात बलती रहती है, साक्षात् अनुभव हो जाता है।

'इस स्थान की सब खिड़कियाँ खोल दो, प्रभु के प्रकाश को व वायु के तेज को अन्दर प्रवेश करने दो।' शान्त स्थिर एकाग्रचित्त होकर उस अनन्त आनन्दस्वरूप परम प्रिय प्रभु की उपासना में एकरस महर्षि मग्न हो गए। 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो, तूने अच्छी लीला की।' गुणगुणाकर ने अपने भौतिक शरीर को सदा के लिए मौन कर परमेश्वर की व्यवस्था में अपने आप को सौंप दिया। एक महान जीवन की महान यात्रा की समाप्ति पर अन्तिम दृश्य को देखकर एक भक्त का आत्मबोध पूर्ण हो गया और प्रारम्भ हुई प्रभु से प्रार्थना-'हे स्वप्रकाश स्वरूप! सूर्य चन्द्रमा आदि प्रकाशकों के भी प्रकाशक! हे तेजोस्वरूप! अनन्त तेज को धारण करने वाले परम तेजस्वी! हे ज्योतिपुंज! ज्योतियों की ज्योति! मुझे अविद्या अंधकार से दूरकर अपनी शाश्वत ज्योति और अपने अनन्त प्रकाश की ओर ले चलो। मेरे मन में व्याप्त अज्ञान को, अविद्या को, असत्य को, अविश्वास को व अश्रद्धा को सदा सदा के लिए मुझसे दूर कर दो। हे अविद्या अंधकार निर्मूलक! मुझमें अपने पवित्रतम सतोगुण को धारण कराओ। रजोगुण व तमोगुण मुझे मेरे कर्त्तव्य पथ से डिगा न सकें। हे सत्यस्वरूप परमात्मन्! मुझे भी सत्य की ओर ले चलो, मैं जीवन में सदा सत्याचरण करने वालों का ही साथ दूँ, अन्यों का नहीं। हे आनन्दस्रोत आनन्ददाता! हे अमृत स्रोत अमृतप्रदाता! आप कृपा करके मृत्यु रूपी दु:ख से छुड़ाकर मुझे अपने अमृत की प्राप्ति कराओ। मैं सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर आपकी आज्ञाओं का पालन करता रहूँ। हे सच्चिदानन्द अनन्तस्वरूप परमात्मन्! मेरा जीवन आनन्दमय प्रकाशमय, ज्योतिर्मय, तेजोमय व अमृतमय हो जाए और मैं दूसरों का जीवन भी आनन्दमय, प्रकाशमय, ज्योतिर्मय व अमृतमय बनाने के लिए सदा कार्य करता रहूँ। हे परम दयालु देवों के देव! आप की दया कृपा सब पर बनी रहे, सब का मंगल हो। आज के दिन आपसे यही विशेष प्रार्थना है, कृपया इसे स्वीकार कर कृतार्थ करें। ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

www.thearyasamaj.org

हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो!

❒मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति

कार्त्तिक मास की अमावस्या की संन्ध्या आ रही थी। अस्ताचल को जाते हुए सूर्य की किरणें निरन्तर लंबी होती जा रहीं थीं। इधर वेदों के प्रकाण्ड विद्वान्, व्याकरण, निरुक्त, तथा निघंटु के निष्णात सूर्य महर्षि दयानन्द के प्राण भी उनके पंच भौतिक शरीर को छोड़कर अन्यत्र जाने की तैयारी कर रहे थे। भिनाय कोठी अजमेर के उस विशाल कमरे के सभी दरवाजे उजाल-दान खोल दिए गए थे। लाहौर से आए महान् वैज्ञानिक पं० गुरुदत्त विद्यार्थी उनके पीठ के पीछे से कुछ हटकर उनके सम्मुख खड़े हो गए थे।

आज का ही दिन उन्होंने कुछ शांति से व्यतीत किया था। सायं पलंग पर कुछ देर बैठकर लेट गए। एक भक्त के पूछने पर कि अब आप कहाँ हैं, दयानन्द ने धीमे स्वर में कहा-'ईश्वरेच्छा में।' इधर प्राय: सायं के ५:३० बज रहे थे। उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और फिर छत की ओर दृष्टि डाली। उन्होंने सभी आगंतुक महानुभावों को अपने पीछे खड़े होने को कहा। कक्ष के चारों ओर के द्वार एवं गवाक्ष खुलवा दिए। निकट खड़े ब्रह्मचारी शिष्य से पक्ष, तिथि तथा वार की जानकारी प्राप्त की। एक बार पुन: कक्ष की ऊपर वाली छत को देखा। उन्होंने लेटे ही लेटे कई वेदमंत्रों के पाठ के साथ-साथ - ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव। यजुर्वेद ३०/३ का पाठ कुछ ऊँचे स्वर में किया। संस्कृत में ईश्वरोपासना की और भाषा में भी प्रभु का गुणकीर्त्तन किया। फिर प्रसन्नतापूर्वक गायत्री-मंत्र का पाठ करने लगे और कुछ देर समाधिस्थ होकर आँखें खोल दीं। बस अन्तिम क्षण आया देखकर दयानन्द ने कहा-

'हे दयामय। हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। तैने अच्छी लीला की।' पुन: करवट लेकर श्वास रोककर बाहर निकाल दिया और दूसरे ही क्षण उनकी संदीप्त आत्मा इस धराधाम से विदा होकर परमात्मा के दिव्य धाम में जा विराजी। उस समय सायं के छ: बजे थे। उस वर्ष यह दीपावली का पर्व ३० अक्तूबर सन् १८८३ को आया था। यह आत्मा की विदाई का दृश्य, विज्ञान के निष्णात विद्वान्, जिनकी पुस्तकें इंग्लैंड-यूरोप में पढ़ाई गई- पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, बहुत आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। गुरुदत्त ने लिखा-'दयानन्द की अन्तिम यात्रा के समय दयानन्द की मन:स्थिति ऐसी लग रही थी, मानो उनकी पवित्र आत्मा अपने से किसी श्रेष्ठ तत्त्व, जो कि परमानन्द का भण्डार है, से मिलने को अत्यधिक आतुर हो रही थी। उस समय दयानन्द के चेहरे पर शांति के भाव तथा प्रसन्नता की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। दयानन्द की यात्रा का यह दृश्य मेरी आंखों के सम्मुख अभी भी घूमता दिखाई पड़ता है। उसी समय मेरे आत्मा में ईश्वर के अस्तित्व के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा उत्पन्न हो गई। धन्य है उस दयानन्द को जिसने अपने अन्तिम समय में भी मुझ जैसे नास्तिक को परमात्मा का भक्त और आस्तिक बनने के लिए बाध्य कर दिया।'

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के उपर्युक्त कथन को पढ़कर, सुनकर तथा चिन्तन मनन के पश्चात् कुछ बुद्धिजीवियों ने एक प्रश्न उत्पन्न किया- वैदिक मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा अपने अन्तिम समय में कहे गए इन शब्दों में कि 'हे

महाप्रयाण के साक्षी

'दयानन्द की अन्तिम यात्रा के समय दयानन्द की मन:स्थिति ऐसी लग रही थी, मानो उनकी पवित्र आत्मा अपने से किसी श्रेष्ठ तत्त्व, जो कि परमानन्द का भण्डार है, से मिलने को अत्यधिक आतुर हो रही थी। उस समय दयानन्द के चेहरे पर शांति के भाव तथा प्रसन्नता की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही थी। दयानन्द की यात्रा का यह दृश्य मेरी आंखों के सम्मुख अभी भी घूमता दिखाई पड़ता है। उसी समय मेरे आत्मा में ईश्वर के अस्तित्व के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा उत्पन्न हो गई। धन्य है उस दयानन्द को जिसने अपने अन्तिम समय में भी मुझ जैसे नास्तिक को परमात्मा का भक्त और आस्तिक बनने के लिए बाध्य कर दिया।' -पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

www.thearyasamaj.org

दयामय, हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरा यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा!!! तैने अच्छी लीला की।' की संगति तर्कयुक्त ढंग से किस प्रकार लगाई जा सकती है? इन जिज्ञासुओं ने प्रश्न किया–

क्या ईश्वर में भी कोई इच्छा होती है?

क्या उसे भी इच्छा पूर्ण करने की आवश्यकता पड़ती है?

क्या ईश्वर भी पौराणिक ईश्वर की तरह लीलाएँ करता है?

आईए दयानन्द के इस बलिदान पर्व पर इन तीनों प्रश्नों के उत्तर के लिए कुछ सोचें।

अंग्रेजी में एक कहावत है– 'मैन प्रपोजेज, बट गॉड डिस्पोजेज' भाषा में कहते हैं– तेरे मन कुछ और है विधना के कुछ और। भाव यह कि मनुष्य अपनी योजनाएँ बनाता है, परन्तु ईश्वर उनका अंत कर देता है।

जिन्होंने महर्षि दयानन्द लिखित कालजयी महान् ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' ध्यानपूर्वक पढ़ा है, वे भलीभांति जानते हैं कि महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में ब्रह्मचर्य और वेदाध्ययन की बड़ी गहन चर्चा की है। महर्षि जी की मान्यता है कि ब्रह्मचर्य आदि नियमों का कठोरता से पालन करके अपनी आयु को तिगुना (३००वर्ष) चौगुना–४०० वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। दयानन्द सरस्वती अखण्ड ब्रह्मचारी थे। वे भी चार सौ वर्ष तक जीवित रहकर सम्पूर्ण चारों वेदों का सुन्दर और सरल भाषा में जनसाधारण के हित में उच्चकोटि का भाष्य करना चाहते थे। वे अपनी योजना के अनुसार यजुर्वेद का पूरा भाष्य तथा ऋग्वेद का आंशिक भाष्य कर पाए। दुर्योगवश उनके ही पाचक ने उन्हें २९ सितम्बर १८८३ को रात्रि को सोने से पूर्व दूध में संखिया और कांच को पीसकर पिला दिया जिसके कारण एक माह पश्चात् ३० अक्तूबर १८८३ ई० को ऋषिवर दयानन्द की मृत्यु हो गई। उनकी इच्छा तो चार सौ वर्ष तक जीवित रहने की थी, किन्तु ईश्वरीय व्यवस्था, पूर्वजन्म के कर्मफल के कारणस्वरूप उन्हें ५९ वर्ष की आयु में ही शरीर त्यागना पड़ा। अर्थात् जीव की इच्छा, फिर चाहे वह कैसी और कुछ भी हो, परमात्मा की इच्छा अर्थात् व्यवस्था के सम्मुख पराजित हो जाती है। इसलिए दयानन्द ने अपने अन्तिम क्षणों में ठीक ही कहा था–ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।

परमात्मा के समक्ष अपनी इच्छा को सम्मुख न रखकर उसकी ही कर्मफल व्यवस्था तथा इच्छा को सर्वोपरि रूप में स्वीकार करना एक महान् आस्तिक आत्मा का ही कार्य हो सकता है, अन्य का नहीं। द्वितीयत: अन्तिम समय में उनकी आत्मा की उत्सुकता, परमात्मा के परमानन्द की प्राप्ति की तीव्र इच्छा उनके ललाट पर स्पष्ट झलक रही थी। मानो उनकी आत्मा उस परमात्मा तक पहुंचने, आत्मिक आनन्द प्राप्त करने के लिए बेचैन सी थी। इस कारण प्राण त्यागते समय दयानन्द का वह शरीर जो फोड़े फुंसियों से भरा था, उसमें न तो कम्पन हुआ और न तड़फने की थोड़ी सी भी हलचल।

महर्षि दयानन्द तो ऐसा आस्तिक महापुरुष था, जो रूठकर अपने पिता परमश्वर से उलहाना भी किया करता था। जिस प्रकार संतान कभी कभी रूठकर अपने माता पिता से उपालम्भ या शिकायतें किया करते हैं और इसके पश्चात् चुप हो जाते हैं, ठीक इसी प्रकार दयानन्द ने भी गौहत्या के विरोध में परमात्मा को उलाहना देते हुए लिखा–क्या तेरे न्यायालय में इन मूक प्राणियों की कोई सुनवाई नहीं है? जो ये निरपराध मारे जा रहे हैं? (गोकरुणानिधि) ऐसा सच्चा उलाहना या उपालम्भ कोई सच्चा आस्तिक ही कर सकता है। कहते हैं महर्षि दयानन्द को १७ बार विष, तलवार आदि से मारने का प्रयास किया गया। परंतु ईश्वरीय इच्छा से दयानन्द मृत्युंजय बने रहे। संभव है ये १७ बार के प्रयास उस प्रभु की लीला ही हों। यह तो ध्रुव सत्य है कि मनुष्य मरने के लिए ही उत्पन्न होता है और उत्पत्ति के पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होता है। क्या दयानन्द इस शाश्वत नियम से अनभिज्ञ थे! कदापि नहीं। इसीलिए उन्होंने १७ बार के प्रयासों में से इस अन्तिम प्रयास को भी लीला कहा। यह स्मरणीय है कि इस अन्तिम लीला के प्रति दयानन्द ने कोई उलाहनापूर्ण विचार व्यक्त नहीं किए।

अंत में परमात्मा की इस लीला के संबंध में भी दार्शनिक दृष्टि से विचार कर लिया जाए।

परमात्मा को ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहा गया है। वही एकमात्र सृष्टि का उत्पत्तिकर्त्ता, पालनपोषणकर्त्ता तथा संहारकर्त्ता है। परमात्मा की यह लीला यथापूर्वमकल्पयत् (ऋग्वेद १०/१७०/२) के अनुसार चलती रही, चल रही है और भविष्य में भी चलती रहेगी। यह त्रैतवाद का अकाट्य सिद्धान्त है– प्रकृति के एक वृक्ष पर बैठा एक पक्षी (आत्मा–जीवात्मा) फल खा रहा है और दूसरा सुपर्ण पक्षी केवल बैठे हुए उस जीव को स्वतंत्रतापूर्वक फल खाते हुए देख रहा है। उसकी इस क्रिया में न तो यह साधक और न बाधक। इधर प्रकृति पर भी उसका नियंत्रण है। जड़ होने के कारण उसे भी परमात्मा ने अपने ईक्षण के कारण गतिमान् किया तथा कर रखा है। उसे इन सब कार्यों के लिए किसी माता के गर्भ में जाकर स्थित नहीं होना पड़ता है अर्थात् अवतारी पुरुष बनने की आवश्यकता ही नहीं। वह जन्म नहीं लेता।

महर्षि दयानन्द ही ऐसे विद्वान् हुए हैं जिन्होंने

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

www.thearyasamaj.org

पवित्र दिन पर यह पाप क्यों?

❐रामफल सिंह आर्य, ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

भारत एक अत्यन्त प्राचीन देश है और उतनी ही पुरानी है इसकी संस्कृति। किसी भी देश की संस्कृति उसके पर्वों में परिलक्षित होती है। जिस देश के जैसे पर्व होते हैं उसी प्रकार की परम्परायें वहाँ प्रचलित होती हैं अथवा यूं भी कह सकते हैं कि जैसी परम्परायें होती हैं वैसे ही पर्व मनाये जाते हैं जो लगातार कार्यों में व्यस्त जनमानस के अन्दर एक उत्साह एवं उल्लास की लहर उत्पन्न कर उसे पुनः स्फूर्त कर देते हैं।

भारत देश में पर्वों की भरमार है। एक के पश्चात् दूसरा पर्व लगातार आता रहता है और हम जीवन में नित्य नूतनता का अनुभव करते हुए निरन्तर कार्यशील बने रहते हैं। हमारे पूर्वजों ने भली-भांति पर्वों के इस महत्व को समझा, अतः एक ऐसी व्यवस्था को जन्म दिया कि हम आर्य लोग कभी भी जीवन में निराशा का अनुभव नहीं करते थे। कोई भी ऋतु हो, कैसा भी समय हो, हम निरन्तर नवीनता से भरे रहते हैं और एक प्रेममय मिलन का उल्लासमय वातावरण सदैव बना रहता है। मात्र प्रसन्नता से युक्त समय को ही नहीं, अपितु समाज एवं मानव कल्याण के महान कार्यों को करते हुए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले योद्धाओं के जन्म और परलोक गमन के दिवसों को भी यहाँ पर एक पर्व का रूप दे दिया गया ताकि उनसे अन्यों को भी प्रेरणा मिल सके। उन महापुरुषों के प्रति हम अपना आदर एवं सत्कार प्रकट करके कृतघ्नता के महापाप से तो मुक्ति पाते ही हैं उनके उज्ज्वल जीवन से अनेक गुणों को स्वयं में धारण करने का भी प्रयत्न करते हैं।

भारत क्योंकि एक कृषि प्रधान देश है; अतः यहाँ के अधिकतर पर्व भी कृषि के कार्य कलापों से जुड़े हुए हैं। पर्वों की इस माला में एक अत्यन्त प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण पर्व है 'दीपावली' या दीवाली। परन्तु इसका प्राचीन नाम है 'शारद नवसस्येष्टि'। हमारे देश में दो फसलें मुख्य रूप से होती हैं आषाढ़ी एवं श्रावणी या सावनी। दोनों फसलों के आगमन पर किसान का मन प्रसन्नता से नाचने लगता है। यह ऐसा अवसर है जब उसके अनथक श्रम का प्रतिफल मिलने वाला है। शीतोष्ण को सहन करके दिन-रात फसल को बच्चों की भांति पालते हुए आज उसका घर भरने का समय आन पहुंचा है। यह ऐसा शुभ अवसर है जब किसान का अपना पेट पलने के अतिरिक्त पूरा संसार इस अन्न देवता से अपनी उदर पूर्ति कर सकेगा। वास्तव में तो कृषक की समाज-यज्ञ में यह ऐसी आहुति है जिस पर न्यौछावर होने को मन करता है। समाज यज्ञ में तो उसने आहुति डाल ही दी है परन्तु बिना अग्नि को भोग लगाए वह भला इस भोग का भक्षण कैसे कर सकता है? इसलिए वह अपना सब नवान्न ले आया अग्नि देवता के समीप और एक-२ करके आहुति डालता चला गया। सब नये अन्न, दलहन एवं तिलहन उसने यज्ञ में डाले और अपने लिये यज्ञशेष रखा। नव सस्येष्टि शब्द ही कह रहा है नव=नयी, सस्य=फसल, अन्न, ईष्टि=यज्ञ। यह था इस पर्व का स्वरूप। पूरे परिवार आस पड़ोस, ईष्ट-मित्र, सम्बन्धियों को आमन्त्रित करके यज्ञाग्नि में नये अन्न से आहुतियां डाल कर सबके साथ मिलकर अब नृत्य एवं गायन के साथ पूरे उत्साह में भरकर वह मारे प्रसन्नता के फूला नहीं समा रहा। यह थी हमारी मिल बांट कर खाने एवं पर्व मनाने की अति पावन पुनीत परम्परा।

दीपावली के इस पावन पर्व पर आज जो कुप्रथा चल पड़ी है- पटाखे चलाने की; इसने तो सारे पर्व का स्वरूप ही विकृत कर डाला है। प्रतिवर्ष अरबों खरबों रुपये के पटाखे उस देश में फूंक दिये जाते हैं जिस देश में ५० प्रतिशत लोगों का जीवन गरीबी रेखा से नीचे है और लगभग २० करोड़ लोग जिसमें प्रतिदिन भूखे पेट सोते हैं। इतना ही नहीं, पटाखों के चलने से पूरे देश में आकाश से बारूद युक्त आग बरसती है, जिससे भंयकर रूप से वातावरण प्रदूषित होता है, विषैला हो जाता है जिसके कारण दीपावली के उपरान्त रोगों का अम्बार लग जाता है। खांसी, जुकाम, बुखार, एलर्जी, दमा, नेत्र रोग, फेफड़ों के रोग, हृदय रोग आदि का प्रकोप भरपूर रहता है। इस रात को यदि आप घर से बाहर निकल कर देखें तो पता लगेगा कि प्रदूषण के कारण सांस लेना भी कठिन हो जाता है। मान लीजिये किसी नगर में दस हजार घर भी हैं और एक घर में पांच सौ रुपये के भी पटाखे आते हैं तो कुल मिला कर ५००x१००००=५०,००,०००/-रूपये के पटाखे जल गये। जबकि ५००/- रुपये की यह राशि बहुत कम है। कुछ घर तो ऐसे हैं जिनमें दो से अढ़ाई हजार के पटाखे फूंक देना

www.thearyasamaj.org

अति सामान्य सी बात है। अब पूरे देश का अनुमान आप स्वयं लगा लें। वातावरण के प्रदूषण के साथ-२ ध्वनि प्रदूषण भी भंयकर रूप में फैलता है। जबकि उगती फसल के लिये इस समय वर्षा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। सारा वायुमण्डल बारूद से भर जाने के कारण यदि वर्षा होगी तो वह भी प्रदूषित ही होगी जो जीवनदायी होने के स्थान पर विष का काम करेगी। हमारा वायुमण्डल तो पहले से ही उन विषैली गैसों के कारण प्रदूषण स्तर को पार कर चुका है जो कि फैक्टरियों, वाहनों, धूम्रपान, कूड़ा-कचरा आदि से निकलती हैं; उस पर यह पटाखों का प्रदूषण तो कोढ़ में खाज के समान है।

इसका एक और पक्ष भी है। प्रतिवर्ष पटाखों के कारण लगने वाली आग से करोड़ों रुपयों की हानि भी लोग उठाते हैं, जिसमें सब कुछ जलकर नष्ट हो जाता है। कितनी दुकानें, कितने घर, कितने खेत-खलिहान, कितने जंगल प्रतिवर्ष जलते हैं, इसका अनुमान तो आंकड़े एकत्रित करने पर ही हो सकता है। कितने बच्चों के अंग झुलस जाते हैं, कितनों की आखें चली जाती हैं जो जीवन भर अन्धकार में जीवन यापन करने पर विवश हैं। फुलझड़ी, अनार आदि के तीव्र प्रकाश से आँखों को कई प्रकार से हानि पहुंचती है और कई बार अन्धेपन की घटना देखी जाती है। कभी आपने अनुमान किया कि पटाखा फैक्टरी, जिनका वातावरण दुर्गन्ध एवं सीलन भरा रहता है, उनमें कार्य करने वाले लोगों को असाध्य रोग हो जाते हैं। यद्यपि पटाखों के ऊपर लिखा रहता है कि इनके बनाने में बाल श्रमिकों से कार्य नहीं कराया गया है, परन्तु यह कहने मात्र को है। वास्तव में इन फैक्टरियों में आग लगने की दुर्घटनायें हो जाती हैं तो मजदूर जीवित ही आलू की तरह भुन जाते हैं। कई वर्ष पूर्व हरियाणा प्रान्त के रोहतक में पटाखा फैक्टरी में आग लगने से चालीस व्यक्ति अन्दर ही भस्म हो गये थे।

आश्चर्य है कि इन अनेक कारणों के होते हुए भी हम कभी यह नहीं सोचते कि पटाखों को प्रयोग न करें। पता नहीं क्यों, हमने यह वृत्ति बना ली है कि बाजार में चाहे कुछ भी आ जाये हम कभी उसके उचित या अनुचित पर ध्यान नहीं देते, बस लकीर के फकीर बन कर अन्धाधुन्ध अपना लेते हैं। पता नहीं किस मूर्ख के मन में यह पटाखे चलाने का विचार उत्पन्न हुआ होगा और अपनाने वालों ने इसे बिना सोचे समझे अपना लिया होगा। उससे भी अधिक आश्चर्य तो इस बात का है कि कई अरब रूपये के पटाखे उस देश में जलाये जाते हैं जिस देश में २० करोड़ लोग प्रतिदिन भूखे सोते हैं, रहने को घर नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, करने को कोई काम नहीं?

अब ठण्ड का मौसम आने वाला है, कितनों की सर्दी से मृत्यु हो जाती है। कितने रोगी दवाईयों के अभाव में प्राण त्याग देते हैं अथवा मृत्यु से भी अधिक भयानक कष्ट भोगते हैं। अब, जब लोगों को रोग होने लगते हैं तो कहते हैं कि सूखी ठण्ड पड़ रही है, वर्षा होनी चाहिए। अरे भाई, वर्षा कहाँ से होगी? आसमान से तो आप आग बरसा रहे हैं, विषैला दुर्गन्धयुक्त धुआं छोड़ रहे हैं। वर्षा तो यज्ञ से होती है। वह भी बिल्कुल शुद्ध, अमृत के समान लाभकारी, जिससे जीव एवं वनस्पति- दोनों का कल्याण होता है।

लोग मानते हैं कि दीपावली के दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी अपना वनवास पूर्ण करके अयोध्या वापस आये थे तो अयोध्यावासियों ने दीपमाला करके उनका स्वागत किया था। वैसे तो यह विचार ही भ्रान्त है, श्री राम एवं दीपावली का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु थोड़ी देर के लिये मान भी लें कि श्रीराम के आगमन पर दीपमाला की गई थी- उसी के प्रतीक के रूप में हम आज भी दीपावली का पर्व मनाते हैं तो श्रीराम के आगमन पर पटाखे भी चलाये थे क्या?

यह एक भयानक समस्या है जो प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है और इसके कारण बढ़ रहे हैं अनेकों रोग। ऐसे में हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम जागरूक बनें और वर्तमान की इस समस्या का समाधान करें। लोगों को समझायें कि पटाखों का खेल समाप्त करें। धार्मिक संस्थाओं का भी यह दायित्व है कि अपने लोगों को इस कार्य से रोकें। धार्मिक प्रचारकों को भी इस दिशा में प्रचार करना चाहिये। सरकार भी यदि चाहे तो पटाखों के प्रयोग पर रोक लगा सकती है। प्रदूषण नियन्त्रक बोर्ड को भी इसका कड़ा संज्ञान लेना चाहिये।

कितना अच्छा हो कि पटाखों पर होने वाले व्यय का यदि आधा भाग भी किसी परोपकार के कार्य के लिये, लोगों के कल्याण के लिये, सामूहिक यज्ञादि करने के लिये, असहायों की सहायता के लिये व्यय होने लग जाये! एक ओर जनता महंगाई की मार से संतप्त है तो दूसरी ओर यह व्यर्थ का खर्च। तनिक विचारिये :-

पटाखों से :-

१ न तो कोई लाभ होता है न ही ये किसी के काम आते हैं।

२ ध्वनि एवं वायु प्रदूषण फैलता है।

३ अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

४ धन को सामने रख कर आग लगा दी जाती है।

५ अनेकों दुर्घटनायें होती हैं।

६ त्यौहारों का स्वरूप विकृत होता है।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की देन

❒पण्डित जगदेव सिंह सिद्धान्ती

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द आप्त पुरुष थे। उनकी वाणी, लेख और जीवन सत्य के अर्पण रहे। वेदों और सत्यशास्त्रों के पारंगत विद्वान् थे। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद; चारों मूल मंत्र-संहिताओं को ईश्वरीय ज्ञान और स्वतः प्रमाण मानते थे। कर्त्तव्य अकर्त्तव्य के निर्णय में प्रत्यक्षादि प्रमाणों के प्रयोग आवश्यक समझते थे। योगाभ्यास द्वारा समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात् करने का उपदेश देते थे। चक्रवर्ती राज्य पर्यन्त लौकिक उन्नति और परमपद मोक्ष में ब्रह्म के आनन्द की प्राप्ति को मानव जीवन का ध्येय मानते थे। ज्ञान, कर्म और उपासना के समुच्चय सम्बन्ध से ही मानव जीवन का उत्कर्ष समझते थे। प्रत्येक मनुष्य को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम के पालन का अपनी-अपनी योग्यता और स्थिति के अनुसार आवश्यक उपदेश देते थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों का आधार गुण, कर्म, स्वभाव से स्वीकार करते थे, जन्म मात्र से नहीं। मनुष्य मात्र को यज्ञ के करने और वेद पढ़ने का अधिकारी बतलाते थे। स्त्री जाति का सम्मान अनिवार्य कहते थे।

गृहस्थ को पंच यज्ञों के पालन का उपदेश देते थे। कहते थे कि ब्रह्मयज्ञ करने से विद्या, शिक्षा, धर्म-कर्म, सभ्यता आदि शुद्ध गुणों की वृद्धि होती है। अग्निहोत्र से वायु, वृष्टि और जल की शुद्धि होकर वृष्टि द्वारा संसार को सुख प्राप्त होता है और शुद्ध वायु के श्वास प्रश्वास, खान-पान से आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का अनुष्ठान पूरा होता है। इसलिये इसको देवयज्ञ कहते हैं क्योंकि वायु आदि पदार्थों को शुद्ध कर देता है। पितृ यज्ञ से जब माता-पिता और ज्ञानी महात्माओं की सेवा की जाती है तो उस मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है, उससे सत्य असत्य का निर्णय कर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करके सुखी रहता है और कृतज्ञता का भाव बढ़ता है। बलिवैश्यदेव यज्ञ से प्राणीमात्र को अन्नादि देने से परोपकार की भावना बढ़ती है और अतिथि यज्ञों से सर्वत्र गृहस्थों को सहज से सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है।

प्राणायाम आदि अष्टांग योग पद्धति के द्वारा एक ईश्वर का साक्षात् करना ही उपासना बतलाते थे और पाषाणादि मूर्तिपूजा द्वारा ईश्वर प्राप्ति को मिथ्या कहते और इसका निषेध करते थे। किसी भी नवीन मत-मतान्तर के चलाने का लेशमात्र भी उनका अभिप्राय नहीं था। उन्होंने कहा कि मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ जो तीन काल में सभी को एक जैसा मानने योग्य है। जो सत्य है उसको मानना और मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना, छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, मैं उनको पसन्द नहीं करता। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान बहुत से मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं, उनका ग्रहण और एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका परित्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्य असत्य का स्वरूप समर्पित कर देवें, पश्चात् वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्य अर्थ का ग्रहण और मिथ्या अर्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

विद्यार्थियों के लिये ब्रह्मचर्यपूर्वक आर्ष शिक्षा प्रणाली का ही प्रबल रूप से प्रचार करते थे और इस नियम पर बल देते थे कि सब विद्यार्थियों को तुल्य वस्त्र, खान-पान, आसन दिये जायें, चाहे वे राजकुमार, राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र के सन्तान हों। सबको तपस्वी होना चाहिये। बालक और बालिकाओं की शिक्षा पृथक्-पृथक् शिक्षणालयों में देना ही श्रेष्ठ बतलाते थे।

समाज सुधार के कार्य पर बहुत बल देते थे। जन्म से ऊँच-नीच भावों को दूषित समझ कर परित्याग करने में ही समाज की उन्नति और हित समझते थे। राष्ट्र में वैज्ञानिक उन्नति और यंत्र कला-कौशल, सब प्रकार के यानादि निर्माण को बहुत आवश्यक बतलाते थे और इस उत्तम कार्य का उन्होंने यज्ञों की व्याख्या में ही वर्णन किया है। ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका में वेद मंत्रों के आधार पर विमानादि निर्माण वैज्ञानिक रहस्यों पर बहुत उत्तम प्रकाश डाला है।

मनुष्य जीवन के सभी अंगों पर सामाजिक आधार पर विचार किया। यहाँ तक कि मृत्यु हो जाने पर शव को दाह करने की पद्धति को ही युक्तियुक्त सिद्ध किया है और

www.thearyasamaj.org

दाह करते समय घृतादि उत्तम पदार्थों द्वारा शव को जलाना अनिवार्य बतलाया है जिससे वायुमण्डल में दूषित, दुर्गन्धित परमाणु नष्ट होकर सुगन्ध से जनता का हित होवे।

पशु-पालन पर भी सुन्दर विचार देते हुये कहा है कि गौ आदि पशुओं की वृद्धि से दूध, घी आदि पदार्थों की प्राप्ति होती है। एक गाय की एक पीढ़ी से दूध आदि से अनुमान पाँच लाख व्यक्तियों का पालन-पोषण होता है। गौ के संरक्षण और संवर्द्धन तथा गौ-वध बंद करने की समस्या पर युक्तिपूर्वक उल्लेख गौकरुणानिधि पुस्तक में किया। खेती और जंगल की रक्षा के लिये कृषि-रक्षिणी सभा के नियम भी बतलाए हैं।

ऋषि दयानन्द पूर्ण विरक्त तपस्वी होते हुये भी राष्ट्रीय समस्या पर बहुत श्रेष्ठ विचार रखते थे। उन्होंने भारत के इतिहास पर भी खोजपूर्ण भाव प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने "आर्य" शब्द का ही प्रयोग सर्वत्र किया है यथा आर्यावर्त्त देश, आर्य जाति और आर्य भाषा। प्रबल प्रमाणों से यह सिद्ध किया कि इस हमारे देश में आर्य जाति से पूर्व कोई नहीं बसता था। आर्यों ने ही सृष्टि आरम्भ के पश्चात् इस देश को बसाया। इसलिये इसका नाम सर्वप्रथम आर्यावर्त्त ही रखा गया। आर्यावर्त्त की सीमा कहते हुये लिखा है कि हिमालय पर्वत राष्ट्र की सीमा है।

त्रिविष्टप् (तिब्बत) भी हमारे राष्ट्र का भाग था। आर्य और दस्यु नाम की कोई विशेष जातियाँ नहीं, किन्तु मनुष्यों में श्रेष्ठजनों को आर्य और दुष्ट कर्म करने वालों को दस्यु कहा जाता है। आर्य द्रविड़ भी भिन्न-भिन्न जातियाँ नहीं हैं। स्वामी शंकराचार्य जी को द्रविड़ कुलोत्पन्न लिखते हुये उनकी विद्या और गुणों की प्रशंसा की है। आदिवासी नाम की जातियों का प्रचार अंग्रेज आदि विदेशी लेखकों ने किया है जो कि भारतीय इतिहास से विरुद्ध है।

भारत की पराधीनता पर ऋषि दयानन्द ने अति दुःख प्रकट करते हुये सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त्त में ही आर्यों का अखंड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है, जो कुछ है सो भी विदेशियों के पदाक्रान्त हो रहा है।

विदेशियों के आर्यावर्त्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना या बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषण आदि कुलक्षण, वेद का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। परमेश्वर कृपा करे कि यह राज रोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाये। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना उसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।

इसी प्रकार उन्होंने राज्य प्रशासन प्रणाली पर भी अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किये हैं कि एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये किन्तु राजा- जो सभापति, तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राज-सभा के अधीन रहे। उनकी नीति में समस्त अधिकार प्रजा में सुरक्षित होते हैं। प्रजा को केवल राजसभा के ही अधीन बतलाया, सभापति के अधीन नहीं। राजा और राजसभा को एक दूसरे के अधीन कहा है। राज्य शासन प्रणाली के मतदान के सम्बन्ध में भी उनका यह मत है कि विद्यासभा, धर्मसभा और राजसभा तीनों की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम बनाये जायें और नियमों के अधीन सब लोग वर्तें। सबके हितकर कामों में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतंत्र और धर्मयुक्त कामों में अर्थात् जो जो निज के काम हैं उनमें स्वतंत्र रहें।

राष्ट्र के प्रति प्रगाढ़ भावना का प्रकाश करते हुये ऋषि कहते हैं कि "जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें।" चेतावनी देते हुये उन्होने बतलाया कि-"परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता।"

शुद्ध रीति से भोजन बनाने, पकाने और खाने में उन्होंने जाति, पंक्ति और सम्प्रदाय के भेदभाव मिटाने का उपदेश दिया, परन्तु यह आवश्यक निर्देश भी दिया कि भक्ष्य और पेय पदार्थों का ही ग्रहण करना चाहिये। हिंसाजन्य और मादक द्रव्यों का सेवन कभी नहीं करना चाहिये।

विश्व संस्कृति को मानव मात्र के लिये वह एक ही समझते थे। देश भेद से संस्कृति में परिवर्तन नहीं होता किन्तु सभ्यता, रीति-रिवाज और रहन-सहन के ढंग ही पृथक् हो सकते हैं। शिवरात्रि के समय ही शिव की पाषाण मूर्ति को सच्चा ईश्वर न जानकर सच्चे शिव की खोज में ऋषि दयानन्द निकले और सच्चे शिव ईश्वर की प्राप्ति स्वयं की और अन्यों को प्राप्ति के लिये मार्ग प्रदर्शन किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द ने हमें अनेक ऐसे उपदेश दिये जिन पर चलकर व्यक्ति, समाज राष्ट्र का सर्वविध कल्याण सम्भव है। यही उनकी मानव मात्र को देन है।

www.thearyasamaj.org

प्रत्येक मनुष्य को अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए

❑ सहदेव 'समर्पित'

मनुष्य को सुख प्राप्ति के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिएँ इसका ठीक-ठीक निर्देश वेदादि सत्यशास्त्रों में किया गया है। जो व्यक्ति वेद अर्थात् परमात्मा की आज्ञा के अनुकूल आचरण नहीं करता उसे परमात्मा की व्यवस्था से दुःख अवश्य प्राप्त होता है। वेदानुकूल आचरण करने से सुख, शांति, समृद्धि, वैभव, आरोग्य और विद्या की प्राप्ति होती है, यह श्रद्धापूर्वक निश्चय करके तदनुकूल ही आचरण मनुष्य-मात्र को करना चाहिए।

अग्निहोत्र आर्ष-परम्परा का एक ऐसा ही कृत्य है जो मनुष्य दुःखों और रोगों से बचाता है तथा सुख-सम्पन्नता, नैरोग्य और विद्या की वृद्धि करता है।

अग्निहोत्र न करने वाला पाप का भागी-

आज पर्यावरण प्रदूषण प्राणिमात्र के लिए एक भयंकर समस्या बन चुका है। अग्निहोत्र इसके निवारण का सफल और सर्वोत्तम उपाय है। यह बात विशेष विचारणीय है कि पर्यावरण प्रदूषण के लिए अधिकांशतः मनुष्य ही उत्तरदायी है। जिस देश में वृक्ष वनस्पतियों और पशुओं की अधिकता होती है, वहाँ पर्यावरण प्रदूषण प्रायः नहीं होता है। जहाँ मनुष्य अधिक होते हैं, वहीं यह समस्या उत्पन्न होती है। इसलिए इसके निवारण का उपाय करना भी मनुष्य का ही कर्त्तव्य है क्योंकि वही दुनिया का सर्वाधिक बुद्धिमान् प्राणी कहा जाता है। वेद वैज्ञानिक शिरोमणि महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि जो व्यक्ति अपने द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के निवारण के लिए उतना ही या उससे अधिक सुगन्ध नहीं फैलाते, वे पापी होते हैं। महर्षि दयानन्द ने वायु और जल की शुद्धि को हवन का मुख्य प्रयोजन बताया है। इससे महर्षि की पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का बोध होता है।

पर्यावरण प्रदूषण का उपाय-

आज पर्यावरण प्रदूषण रोकने के लिए और हो चुके प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक उपाय किये जाते हैं, जिनमें वृक्षारोपण प्रमुख है। वृक्षारोपण का भी पर्यावरण में अपना स्थान है। इसके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता, पर आज भयंकर स्थिति धारण कर रहे पर्यावरण प्रदूषण का निवारण इतने मात्र से नहीं किया जा सकता। इसके लिए प्राचीन आर्यावर्त्त की वैज्ञानिक पद्धति अपनानी होगी जो अनुभूत और रामबाण है। वह पद्धति है अग्निहोत्र! जिसे देवयज्ञ के नाम से भी जाना जाता है और जो पंचमहायज्ञ के दूसरे भाग में प्रत्येक गृहस्थ मनुष्य के लिए आवश्यक कर्म बताया गया है।

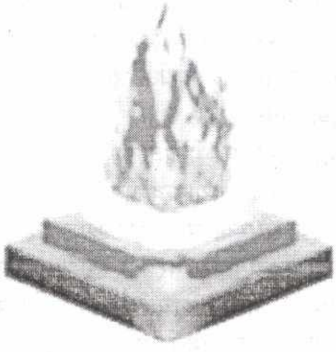

होम करने से उपकार होता है-

यज्ञ के अर्थों के अनुसार (देवपूजा, संगतिकरण और दान) यह आध्यात्मिक, शारीरिक और सामाजिक उन्नति का आधार है। अग्निहोत्र का भी अन्य चार यज्ञों के समान ही इन यज्ञों में बराबर का स्थान और महत्त्व है, इसलिए केवल अग्निहोत्र को भी यज्ञ कहा जाता है। होम, हवन, मख, अध्वर आदि अनेक नामों से वैदिक साहित्य में इसका उल्लेख है। महर्षि दयानन्द के अनुसार पुष्टि, वर्धन, सुगन्ध प्रसार और नैरोग्य; हवन करने के चार प्रयोजन हैं। जीवन के लिए वायु सर्वाधिक आवश्यक तत्त्व है। वायु प्रदूषण से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न हो रहे हैं। ब्रह्माण्ड का वायु शुद्ध करने के लिए घृत आदि पुष्टिकारक; कस्तूरी, केसर आदि सुगन्धित द्रव्यों का हवन करना चाहिए। हवन से दुर्गन्धि और हानिकारक वायु का नाश होता है। इस प्रकार रोगों का भी विनाश होता है। अग्नि में हवन करने से इन पदार्थों के स्वाभाविक गुण नष्ट नहीं होते। अग्नि के संयोग के बिना इन सुगन्धित पदार्थों की यह सामर्थ्य नहीं है कि अशुद्ध वायु को निकाल कर शुद्ध वायु का प्रसार कर सकें, क्योंकि उनमें भेदक शक्ति नहीं है। घृत आदि पदार्थों को खाने से खाने वाले के शरीर आदि की वृद्धि होती है, पर होम करने से उतने ही पदार्थों से हजारों प्राणियों का उपकार

www.thearyasamaj.org

जब तक शरीर नीरोग, स्वस्थ, पुष्ट न होगा तो विद्या प्राप्ति भी संभव नहीं। शरीर स्वस्थ होगा-शुद्ध वायु, शुद्ध जल और शुद्ध अन्न से। और इनकी शुद्धि होगी हवन से। इसलिए हवन ईश्वर की भक्ति का ही साधन है।

होता है। खाना भी अवश्य चाहिए पर उससे अधिक होम करना चाहिए।

अधिक व्यय नहीं-

महर्षि ने प्रत्येक मनुष्य के लिए न्यून से न्यून आहुति का परिमाण बताया है उससे कोई बहुत बड़ा व्यय नहीं होता है, बल्कि उससे शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य के रूप में बहुत बड़ा लाभ ही होता है। महर्षि ने प्रत्येक मनुष्य के लिए छः-छः मासे की सोलह आहुतियों की अनिवार्यता बताई है। इसमें कुल मिलाकर 70-80 ग्राम घृत व्यय होता है। यदि हम प्रतिदिन परिवार के सदस्यों को होने वाली सामान्य बिमारियों पर डॉक्टरों के यहाँ होने वाले व्यय का अनुमान लगाएँ तो यह व्यय कुछ भी नहीं है। आज चाय प्रायः प्रत्येक घर में पी जाती है। यदि हम उसके खर्च को जोड़ें तो हवन का खर्च उसके आगे कुछ भी नहीं है, जबकि वह न तो आवश्यक है और न ही कोई पुष्टि देती है। जिनकी आय कम है वे अन्य अनावश्यक खर्च हटाकर हवन कर सकते हैं। जिनके पास आय के साधन पर्याप्त हैं वे अधिक मात्रा में खर्च कर हवन कर सकते हैं।

पारिवारिक एकता का साधन-

जिन परिवारों में आय के साधन ज्यादा हैं, उन परिवारों की एक बहुत बड़ी विडम्बना है कि उस परिवार के सदस्यों को प्रायः पास बैठने का अवसर कभी-कभी ही मिल पाता है। मिलते भी हैं तो बिजनेस की बातें ही होती हैं। उनके लिए हवन एक वरदान की तरह सिद्ध हो सकता है, जो परिवार को जोड़ने का साधन बन सकता है। यदि वे प्रतिदिन सामूहिक रूप से मिलकर हवन करने का नियम बना लें तो न केवल परिवार के सभी सदस्य एक सुन्दर समय में एक साथ मिलकर बैठ सकते हैं और अपनी आत्मीयता को बढ़ा सकते हैं, अपितु अपने सामाजिक और आध्यात्मिक उद्देश्य को भी पूरा कर सकते हैं। हवन का एक उद्देश्य संगतिकरण भी है। एक अर्थ में संगतिकरण यही है कि हम मिलकर बैठें। मिलकर बैठने से आत्मीयता बढ़ती है और परिवार टूटने से बच सकते हैं। यदि इस लाभ को मिला लें तो हवन पर होने वाला व्यय नगण्य ही ठहरता है।

समय की समस्या-

कुछ लोगों को समय की समस्या है। इस प्रश्न का उत्तर भी ऋषि ने दिया है। विद्यार्थियों का अनध्याय नहीं होता, क्योंकि इससे बुद्धि का विकास होता है और बुद्धि की ग्रहण व स्मरणशक्ति का विकास होता है, थोड़े समय में पढ़ा हुआ अधिक समय तक याद रहता है। फिर अन्य आवश्यक कार्य यथा खाना-पीना, शौचादि नित्य कर्म तो हम करते ही हैं, उनसे पढ़ाई में बाधा नहीं होती। इसी प्रकार हम हवन के लाभों को समझते हुए उसे नित्यकर्म समझते हुए करें तो वह हमारे कार्यों में बाधक नहीं, सहायक ही सिद्ध होगा। आज भी अनेक कामकाजी लोग हैं जिन्होंनें अपनी दिनचर्या में हवन को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया हुआ है और वे अपने क्षेत्रों में अन्य लोगों से अधिक सफल हैं।

होम के सुपरिणाम-

स्व0 चौधरी मित्रसेन जी आर्य ने हवन से कभी नागा नहीं की और सामूहिक पारिवारिक हवन की परम्परा डाली। पूज्य महात्मा हरिदेव जी (महाशय हरद्वारीलाल आर्य, रोहतक) हवन के इतने प्रेमी थे कि आवश्यक कार्यों हेतु यात्रा करते हुए भी हवन करना नहीं भूलते थे। यज्ञ प्रेम के कारण उन्होंने अपने घर का नाम भी यज्ञ भवन रखा। वे एक सफल दुकानदार, आर्य समाजसेवी, गुरुकुल सिंहपुरा के संस्थापक थे। दिल्ली में एक समृद्ध दानी परिवार का नाम ही 'अग्निहोत्री परिवार' प्रसिद्ध है। हमारे पूज्य पिता पं0 चन्द्रभान आर्योपदेशक की साक्षी के अनुसार श्रद्धेय आचार्य विजयपाल जी के पिता वैद्य बलवंतसिंह जी प्रतिदिन अग्निहोत्र करते थे। आचार्य देवव्रत जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पिता चौ0 लहरीसिंह रात को प्रचार में उपस्थित रहते सुबह हवन करने के बाद ही हल जोतते थे।

हाली से अधिक समय की कमी किसी के पास नहीं हो सकती, पर उनका समय नियोजन था और कभी इससे उनके कार्यों में बाधा नहीं पड़ती थी। यही कारण है कि इन लोगों के परिवार में न तो आर्थिक रूप से कोई कमी है और आर्ष परम्पराओं के पालन के कारण ही उनको सन्तान भी ऐसी प्राप्त हुई जो देश और समाज की सच्ची सेवा करके उनका नाम ऊँचा कर रही हैं। किसी व्यक्ति के लिए हवन का इससे अधिक लाभ क्या हो सकता है? और भी निश्चित रूप से बहुत से व्यक्ति हुए हैं और हैं, जिनके बारे

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

www.thearyasamaj.org

गृहस्थाश्रम की महिमा

❏ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती
संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

प्रश्न : गृहाश्रम सबसे छोटा वा बड़ा है?

उत्तर : अपने-अपने कर्तव्य कर्मों में सब बड़े हैं। परन्तु

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।१।।
यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः।।२।।
यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्य्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।३।।
स संधार्य्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः ।।४।। मनु०

जैसे नदी और बड़े-बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रय स्थिर रहते हैं।।१।। बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का व्यवहार सिद्ध नहीं होता।।२।। जिसने ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि दे के प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहाता है। इसलिये मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहाश्रम का धारण करे।।३।। जो गृहाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषों से धारण करने अयोग्य है उसको अच्छे प्रकार धारण करें।।४।।

इसलिये जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहाँ से हो सकते? जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। परन्तु तभी गृहाश्रम में सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों।

(सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास, महर्षि दयानन्द)

स्त्रियों का धर्मगुरु

❏ श्रीमती प्रकाश देवी गोयल,
जौहारी टोला, (जीरो रोड़) ३४, मधुवन, अलवर-३०१००१

आजकल भारत में धर्मगुरुओं की बाढ़ सी आ गई है। अगर ये धर्मगुरु शास्त्रों की मर्यादाओं का पालन करते, अपने शिष्यों को सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देते तथा स्त्रियों को गुरुदीक्षा न देते तो देशवासियों का इतना नैतिक पतन न होता। स्वामी रामसुखदास जी ने कहा है- स्त्री को पति के सिवाय किसी भी पुरुष से किसी प्रकार का संबध नहीं जोड़ना चाहिए। स्त्रियों से प्रार्थना है कि वे कभी किसी साधु के फेर में न पड़ें। आज बहुत ठगी, दम्भ, पाखंड हो रहा है। मेरे पास ऐसे पत्र आते हैं और भुक्तभोगी स्त्रियाँ भी आकर अपनी बात सुनाती हैं, जिससे ऐसा लगता है कि वर्त्तमान समय में स्त्री के लिए गुरु बनाना अर्थात् किसी भी परपुरुष से संबध जोड़ना अनर्थ का मूल है

''साधु को चाहिए कि वह किसी स्त्री को चेली न बनावे। दीक्षा देते समय गुरु को शिष्य के हृदय आदि का स्पर्श करना पड़ता है, जबकि संन्यासी के लिए स्त्री के स्पर्श का कड़ा निषेध है।

पदादपि युवतीं भिक्षुर्न स्पर्शेद् (श्रीमद्भागवत् ११/८/१३) अर्थात् संन्यासी युवती को हाथ से तो दूर पैर से भी स्पर्श न करे। **'मातृवत् परदारेषु'** अर्थात् परनारी को माता के समान मानना चाहिए। पद्मपुराण ५१/५१, ब्रह्मपुराण- ८०/४७ के अनुसार 'अग्नि' द्विजातियों का गुरु है, ब्राह्मण चारों वर्णों का गुरु है तथा एकमात्र पति ही स्त्रियों का धर्मगुरु है। महाराज भर्तृहरि ने लिखा है 'जो वायुभक्षण करके, जल पीकर और सूखे पत्ते खाकर रहते थे, वे विश्वामित्र पाराशर आदि भी स्त्रियों के सुन्दर मुख को देखकर मोहित हो गए, फिर जो शालि धान्य (साठी चावल) को घी, दूध और दही के साथ खाते हैं, वे यदि अपनी इन्द्रियों का निग्रह कर सकें तो यह ऐसा होगा मानो विंध्याचल समुद्र पर तैरने लगे।

इसलिए स्त्रियों को अपने पति के अलावा किसी को भी अपना धर्मगुरु नहीं बनाना चाहिए, अगर बना लिया हो तो तुरंत छोड़ना चाहिए। जो लोग जवान स्त्रियों को अपनी चेलियाँ बनाते हैं एवं उनको अपने आश्रम में रखते हैं उनका स्वप्न में भी कल्याण नहीं हो सकता। शास्त्रों की स्पष्ट आज्ञा के विरुद्ध प्रायः सभी धर्मगुरु स्त्रियों को दीक्षा देकर अपनी चेली बना रहे हैं। इससे भारी अनर्थ हो रहा है। जो धर्मगुरु शास्त्रों की मर्यादा के विपरीत आचरण कर रहे हैं वे स्वयं तो नरक में जाएँगे ही, साथ अपनी चेलियों को भी नरक में ले जाएँगे। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है-

परनारी पैनी छुरी, तीन ठौर ते खाय।
तन छीजे, यौवन हरे, मरे नरक ले जाय।।

www.thearyasamaj.org

नारी के प्रति अपराध - मानवता पर कलंक है।

❑ नरसिंह सोनी आर्य
डागा सेठिया मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

शायद ही ऐसा कोई दिन हो, जिसमें बलात्कार, अपहरण-दहेज प्रताडना-हत्या, भ्रूण हत्या आदि नारी के उत्पीड़न-सम्मान को ठेस पहुंचाने वाले कृत्य न हों। ऐसा क्यों हो रहा है, इस रोग की जड़ कहाँ पर है?

दिल्ली गैंगरेप की घटना ने सारे देश में एक हलचल पैदा कर दी थी। लेकिन उसके बाद भी ऐसी घटनाएँ रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। यह मानवता पर कलंक है। अगर ऐसी घटनाएँ होती रहीं तो मानव और पशु में क्या अंतर रह जाएगा। मनुष्य ने भौतिक उन्नति तो बहुत की, लेकिन सामाजिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में अवनति के द्वार खोल दिए। सारे अच्छे संस्कार लुप्त हो गए हैं। उनका स्थान कुसंस्कारों ने ले लिया है।

ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए समुचित उपाय करने होंगे। सभी अपराधों का जनक है- कुविचार। कुविचारों की बढ़ोतरी में नशीले पदार्थों का बड़ा योगदान है। शराब पर प्रतिबन्ध लगाना अति आवश्यक है। इससे सरकार की आर्थिक हानि तो होगी, लेकिन इस बुराई को दूर करने के लिए इस हानि को सहन करना होगा। साथ ही तत्काल और कठोर दण्ड व्यवस्था होनी चाहिए। बलात्कारियों को तड़पा-तड़पा कर मारना चाहिए। पहले जूतों और कोड़ों से पिटाई करनी चाहिए, फिर नपुंसक बनाकर दण्ड देना चाहिए और जिसने हत्या भी कर दी- उसे प्राणदण्ड अवश्य मिलना चाहिए। महर्षि मनु ने भी बलात्कारियों के लिए प्राण दण्ड की व्यवस्था लिखी है। तभी तो उस जमाने में अपराध बहुत कम होते थे। अगर ऐसा कठोर दण्ड तत्काल अपराध के एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर १०-२० लोगों को दे दिया जाएगा तो बलात्कार जैसी घटनाएं हमेशा के लिए बन्द हो जाएंगी। इसमें इस बात का जरूर ध्यान रखना होगा कि किसी बेगुनाह का सजा नहीं मिले। जो सजा तय की जावे, प्रचार माध्यमों से उसका प्रचार बड़े जोर-शोर से होना चाहिए ताकि लोगों में बलात्कार-हत्या-अपहरण-छेड़छाड़ आदि अपराध के करने में भय उत्पन्न हो। कोई भी अपराधी सजा से बचना नहीं चाहिए। बड़े नेता-मंत्री-पूंजीपतियों के लड़के प्रायः इस तरह के अपराध करने की हिम्मत कर बैठते हैं। उनको पुलिस-सिफारिश और पैसे के बल पर बच निकलने की पूरी उम्मीद होती है। इस बात को ध्यान में रखते हुए किसी अपराधी को बचाने की कोशिश करने वालों को बख्शा नहीं जाना चाहिए। बल्कि अपराध में शामिल होने का दोषी समझना चाहिए। कोई भी कानून हो- ऊपर से बनके नहीं आते। सरकार ही बनाती और परिवर्तन करती है। अगर कठोर दण्ड देने में कोई कमी हो तो उसमें तत्काल परिवर्तन होना चाहिए।

आज पैसा और भोग (सेक्स) का ही माहौल सारे देश में जोर शोर से चल रहा है। शायद ही ऐसा कोई दिन हो, जिसमें बलात्कार, अपहरण-दहेज प्रताडना-हत्या, भ्रूण हत्या आदि नारी के उत्पीड़न-सम्मान को ठेस पहुंचाने वाले कृत्य न हों। ऐसा क्यों हो रहा है, इस रोग की जड़ कहाँ पर है? विचार करने पर आपको मालूम होगा कि सेक्स भोग का विशेष प्रचार ही इसका जिम्मेदार है। टी० वी० सिनेमा-रेडियो आदि में जो नारी का कला के नाम पर, विज्ञापन के नाम पर प्रदर्शन किया जाता है, उसका युवा वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? आप सभी समझ सकते हैं। औरतों को अर्द्धनग्नता त्यागकर कर शालीनता के वस्त्रों को धारण करना चाहिए। पत्र-पत्रिकाएँ भी विज्ञापन के नाम पर प्रायः नारियों को ही अर्द्धनग्नता द्वारा प्रदर्शित करती हैं। यह भोगवाद का प्रचार आधुनिकता के नाम पर हो रहा है। क्या ऐसे में बलात्कार की घटनाएँ कम हो सकती हैं या बन्द हो सकती हैं?

टी० वी० सिनेमा-पत्र-पत्रिकाओं में इस प्रकार के विज्ञापन पर रोक केवल सरकार के माध्यम से ही संभव हो सकती है। क्या सरकार चाहती है कि इस प्रकार के जुल्म नारी पर न हों जो पशुओं से भी बदतर हो रहे हैं। जिसके साथ भोग किया- उसकी हत्या तक कर देते है। इसमें उनको कोई लज्जा नहीं, कानून का कोई डर नहीं! अपने को सर्व शक्तिशाली समझते हैं। धन और जैक बढ़ावा देने वाले सभी प्रचार बंद होने चाहिएं। इसके स्थान पर नारी के सम्मान के लिए प्रचार, बलात्कार व अन्य अपराधों की जो सजा दी जावे, उसका प्रचार हो जिससे लोगों में अपराध के प्रति भय उत्पन्न हो।

आज खेत को ही बाड़ को खा रही है, तो उसकी

www.thearyasamaj.org

रक्षा कौन करेगा? पिता-भाई-गुरु-शिक्षक-चाचा-संत कहे जाने वाले लोग सेक्स के रंग में सारी मर्यादाओं को तोड़कर पशुता की ओर बढ़ चले हैं। इसलिए यदि नारी के सम्मान को, भारतीयता की गौरवपूर्ण मर्यादा को कायम रखना है तो सारी शक्ति लगाकर भोगवाद के प्रभाव को कम करने के उपायों को लागू करना होगा, तभी नारी पर जुल्म बंद होगा। नारी के सम्मान में महर्षि मनु लिखते हैं-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते हैं और जहाँ इनका आदर सत्कार नहीं होता वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं। हमारे प्राचीन गौरव के सम्बन्ध में महाराज अश्वपति ने घोषणा करते हुए कहा था-

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

संस्कृति सम्पन्न मेरे राज्य में न तो कोई चोर बसता है और न कोई कंजूस। न ही कोई मदिरा का सेवन करता है। कोई ऐसा भी नहीं है जो नित्य अग्निहोत्र न करता हो और कोई अविद्वान भी नहीं है। इस राज्य में कोई दुराचारी पुरुष या दुराचारिणी स्त्री भी नहीं है। यह हमारे प्राचीन भारत की संस्कृति की परम्परा रही है। आज ठीक इसका उल्टा हो चला है।

नारी को सम्मान दिलाने के लिए सोच को बदलना होगा। जहाँ भौतिक शिक्षा, अनुशासन की शिक्षा, शरीर के स्वस्थ निरोग व मजबूत करने की शिक्षा दी जाती है, वहीं नारी को सम्मान देने की शिक्षा भी बाल्यकाल से दी जानी चाहिए। आज नारी के प्रति अपराधों की मानो बाढ़ आई हुई है। कोई पीछे नहीं रहना चाहता। भ्रूण हत्या भी बढ़ रही है। इंसान के बच्चों की पशुओं के बच्चों से भी अधिक दुर्दशा हो रही है। आप मंत्री-नेता-कलक्टर आदि जो भी पद पर हों, अगर आप मेरे विचारों से सहमत हैं तो नारी के गिरते हुए सम्मान को बचाने के लिए पूरे जोर शोर से लग जाइये। नारी ही उत्पत्ति और पालन करने वाली है। नारी की दुर्दशा मानवता पर कलंक है। इस कलंक को मिटाने का समय अब आ चुका है। नारी का सम्मान ही समाज, देश और धर्म का सम्मान है।

विषपान करके भी सत्यार्थ प्रकाश किया।।

अपमान सहकर भी दूर अंधविश्वास किया।
व्यवधान सहकर भी दूर विरोधाभास किया।
नमन उस युग सृष्टा द्रष्टा महर्षि को जिसने,
विषपान करके भी सत्यार्थ प्रकाश किया।।

दिशा दी, उषा दी स्वतंत्रता संग्राम को,
शिक्षा से दीक्षा से हर क्षेत्र में विकास किया।
शास्त्रार्थ किये पूर्वाग्रहों से मुक्ति के लिए।
श्रद्धा को तर्क, तर्क को वेदाकाश दिया।।

पाखण्डियों शिखण्डियों ने क्या क्या न किया?
उन पर भी दया कर उनका भ्रम निरास किया।
मूल शंकर की मुमुक्षा में क्या क्या नहीं,
संत्रास सहा, कहां कहां नहीं प्रवास किया।।

व्यक्ति ही क्या विश्व भी आर्य समाज बने,
लक्ष्य को ले दस नियमों का अभ्यास दिया।
अन्त समय में भी नास्तिक को आस्तिक बना,
गुरुप्रसाद दिया, प्रभु का परम विश्वास दिया।।

दीपमालिका को तेरी इच्छा पूर्ण हो प्रभु!
कह महर्षि ने श्वासों से भी संन्यास लिया।
विषपायी को भी क्षमादान कर दिया आजाद
'शिव' तो कभी 'कैलाश' बन वेदप्रकाश किया।।

त्रिपाठी कैलाश 'आजाद'
गणपति पेठ, सांगली - ४७९४७९ महाराष्ट

www.thearyasamaj.org

क्षमा वीर पुरुषों का लक्षण है

नरेन्द्र आहूजा **'विवेक'**, ५०२ जी एच २७ सैक्टर २० पंचकूला मो० ०९४६७६०८६८३

क्षमा में जो महत्ता और औदार्य है, वह क्रोध और प्रतिकार में नहीं। प्रतिहिंसा हिंसा पर आघात कर सकती है पर क्षमा उदारता पर नहीं। क्षमा मनुष्य का अलंकार है। इस जगत् में क्षमा एक ऐसा वशीकरण मंत्र है जिससे मनुष्य दुश्मनों पर भी विजय पा सकता है।

धीर-वीर मनुष्यों के लिए क्षमादान सर्वश्रेष्ठ दान है। बीती बातों को भूलकर जो सामर्थ्यवान व्यक्ति हिंसा का प्रतिकार करने के लिए प्रतिहिंसा न करके क्षमा कर देता है उसे न्यायकर्ता ईश्वर की न्याय व्यवस्था में क्षमा रूपी पुण्य के लिए अच्छी नियति पुरस्कार स्वरूप प्राप्त होती है। वैसे भी हिंसा या अपने प्रति किसी के अपराध पर बदले की भावना रखते हुए प्रतिहिंसा करना पाशविक प्रवृत्ति का पर्याय माना जाता है, जबकि दण्ड देने की शक्ति होते हुए भी शत्रु द्वारा पश्चात्ताप कर लेने पर क्षमा कर देना मनुष्यों का दैवीय गुण कहलाता है। क्षमा की गौरव गाथा लिखते हुए महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है-

क्षमा तेजस्विनां तेजः, क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम्।
क्षमा सत्यं सत्यवतां, क्षमा यज्ञ क्षमा शमः।।

अर्थात् क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है, क्षमा तपस्वियों का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा मनोनिग्रह है। बदले की भावना की अपेक्षा क्षमा उत्तम स्वभाव का लक्षण है।

क्षमा के सिद्धांत को भली भांति समझने के लिए हमें महर्षि दयानन्द के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। अपने जीवन में कितनी बार विष देने वालों को उन्होंने क्षमा कर दिया। यहाँ तक कि अपने प्राणहंता विष देने वाले रसोइये को भी क्षमा करते हुए धन देकर भाग जाने को कहा। इसे कहते हैं क्षमाशीलता। लेकिन अक्सर लोग क्षमा को कमजोरी या मूर्खता का पर्याय मान लेते हैं और फिर अपनी आसुरी प्रवृत्ति को दिखाते हुए उनके प्रति अपराधों में संलग्न हो जाते हैं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कहा है-

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो
उसका क्या जो दन्तहीन विषहीन विनीत सरल हो।

शायद इसीलिए 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' कहकर क्षमाशीलता को धीर-वीर पुरुषों का लक्षण बताया गया है।

अपने अपराधों को जान मान कर प्रायश्चित रूपी पश्चात्ताप करने वाला अपराधी ही क्षमा का अधिकारी होता है। यदि कोई अपराधी अपनी हठधर्मिता वा दुष्ट आसुरी स्वभाव के कारण अपनी भूल को स्वीकार न करे तो वह क्षमा का नहीं, अपितु दंड का अधिकारी होता है। इसलिए महर्षि वेदव्यास ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है। अच्छी तरह जांच पड़ताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाये कि उससे वह अपराध अनजाने में हो गया है, वह दुर्बल मनुष्य है और वह अपने अपराध का पश्चाताप करता है तो वह आपकी क्षमा का अधिकारी है। क्षमा में इसी सिद्धांत की पुष्टि करते हुए गुरु गोविंद सिंह ने कहा है- 'यदि कोई दुर्बल, कमजोर तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है। परन्तु यदि अपराधी हठधर्मी बलवान हो तो उसे दंड अवश्य दो।' जिसे पश्चात्ताप न हो उसे क्षमा कर देना पानी पर लकीर खींचने की भांति निरर्थक है, अपितु हठधर्मी अपराधी को क्षमा करना उसके अपराधों को बढ़ावा देने के समान है।

क्षमा में जो महत्ता और औदार्य है, वह क्रोध और प्रतिकार में नहीं। प्रतिहिंसा हिंसा पर आघात कर सकती है पर क्षमा उदारता पर नहीं। क्षमा मनुष्य का अलंकार है। इस जगत् में क्षमा एक ऐसा वशीकरण मंत्र है जिससे मनुष्य दुश्मनों पर भी विजय पा सकता है। क्षमावान के लिए लोक परलोक दोनों हैं। वह इस जगत् में सम्मान और परलोक में उत्तम गति पाते हैं। क्षमा दंड से बढ़कर है और क्षमा से बढ़कर और किसी बात में दुश्मन को जीतने की शक्ति नहीं है। क्षमाशीलता का पाठ पृथ्वी से सीखें, धरती को जितना खोदें, वह गहराई से उतने रत्न, शीतल जल आदि प्रदान करते हुए सबका पालन पोषण और धारण करती है। यदि समाज में क्षमाशील पुरुष न हों तो मनुष्यों में कभी सन्धि नहीं हो सकती, क्योंकि क्रोध तो झगड़े की जड़ है।

www.thearyasamaj.org

यम नियम से समाधि की ओर

भौतिक संसार में निमज्जित रहने वाले प्राणी! 'उत्तमं ज्योतिः' न सूर्य का प्रकाश है, न विद्युत् का आभास! न प्रभात की रंगीली छटा है, न सायंकाल की लाल उषा। वह वेलाओं से ऊपर है और वेलाएँ उससे प्रकाशित हैं। वह मण्डलों का स्वामी है और मण्डल उस से व्याप्त हैं।

मंत्रों में 'अधिपति' शब्द छः बार दोहराया गया है। प्रत्येक दिशा का स्वामी ओ३म् है। उसी को अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम, विष्णु और बृहस्पति कहा है। उसी को असित (बन्धन रहित, कालिमा रहित) तथा श्वित्र (पवित्र) कहा है। वही अज है, जन्म मरण के बन्धन में नहीं आता। ये शब्द एक दूसरे की व्याख्या करते हैं।

'अधिपति' शब्द के साथ 'रक्षिता' शब्द दोहरा कर वेद ने यह सच्चाई प्रतिपादित की है कि आधिपत्य अर्थात् राज्य का अभिप्राय रक्षा है, अत्याचार तथा बल-प्रदर्शन नहीं। परमात्मा आदर्श राजा है। उनके राज्य में अन्याय अथवा स्वार्थ से काम नहीं लिया जाता। सब प्राणियों का हित किया जाता है। राज्य का कर्तव्य प्रजा के प्रति इससे और अच्छा क्या प्रतिपादित होता?

मनुष्य को प्राणियों का राजा कहते हैं। उसका कर्तव्य भी यही है कि सब प्राणियों का पालन करे। प्राणी उसके भक्षण के लिए नहीं, रक्षण के लिए हैं।

परमात्मा की शक्तियाँ अनन्त हैं। कतिपय शक्तियों के वर्णन से उसकी अतीव शक्तिमत्ता की ओर संकेत है। सूर्य की किरणें प्रकाश देकर जगत की कार्यसिद्धि का अपूर्व साधन हैं। संसार की भट्ठी इन्हीं से गर्म और कार्य-परायण है। वायु तथा आकाश की शुद्धि इन्हीं से होती है। विद्वान और ब्रह्मचारी जिस जाति में नहीं उसका जीवन पाशविक है। अन्न अनाज को भी कहते हैं, पृथ्वी आदि पदार्थों को भी। विद्युत् जगत् की ज्योति है। इसका प्रसरण अणु-२ में है। संसार की धर्त्री शक्तियों में विद्युत् का स्थान बड़ा है। बेल बूटे और वर्षा, आत्मिक तथा शारीरिक शांति के पुंज हैं।

इन पदार्थो के प्रयोगों और उपयोगों पर कई पुस्तक लिखें जाएं तो भी लेख अपूर्ण रहेगा। हमारा कर्तव्य यह है कि हम दाता के दान से पूर्ण लाभ उठाएं।

कई टीकाकार यह यत्न करते हैं कि जिस-२ दिशा के साथ प्रभु के जिस नाम और शक्ति का उल्लेख हुआ है, उस का सम्बन्ध उस दिशा से जोड़ें। कवियों की कल्पना में यह आनन्दप्रद रहस्य होता है। परमात्मा आदि-कवि हैं। उनकी रचना भी आनन्द से शून्य नहीं। परन्तु जिन्होंने वेद का पाठ किया है वे जानते हैं कि प्रत्येक स्थान में यह बात नहीं पाई जाती। लौकिक कविता में भी ऐसी रचना तब तक सुहाती है, जब इसका प्रयोग कहीं-२ आए। अति हुई और काम बिगड़ा।

परमात्मा के किसी नाम विशेष का सम्बन्ध किसी दिशा विशेष से नहीं। न ही उसकी शक्तियों का कार्यक्षेत्र दिशाओं द्वारा परिमित है। वर्षा ऊपर से होती है और बेल बूटे नीचे से उगते हैं। विद्वानों को दाहिने हाथ बिठाओ, यह सभ्यता है। आदित्य अग्रणी होते हैं।

एक सूक्त के भौतिक अर्थ करने में यह व्यवस्था काम दे सकती है।

'ओ३म् भूः पुनातु शिरसि' इत्यादि वाक्यों के अर्थ में भी 'भूः' को 'शिरः' के साथ मिलाने का यत्न किया जाता है। सो कविता का बिगाड़ना है। ऐसी खेंच तान की यहां आवश्यकता नहीं।

सर्व-व्यापक के गुण भी सर्वव्यापी हैं, शक्तियां भी।

जब मनुष्य के हृदय में यह भाव उमड़ा, कि देखो, वह अधिपति किस तरह भांति-२ के वाणों से हमारी रखवाली करता है तो कृतज्ञता के भार से जीव दब गया। रहा न गया, बलिहारी-२ कहकर परमात्मा देव के ऊपर न्योछावर हो गया, इधर नमः-२ कहा और उधर परिक्रमा द्वारा उस आनन्द मद का मतवारा हुआ।

याद आया कि हमारे तो वैरी भी हैं। हम उन से विरोध करते हैं, वे हम से। यहाँ यह व्रत लिया जा रहा है कि रक्षक ही प्रजा का रक्षण करेंगे। ध्यान आया कि हम क्या हैं, जो किसी द्वेष का बदला लेंगे। परमात्मा का न्याय अटल है।

www.thearyasamaj.org

निर्णय के लिए उसी की शरण ली।

साथ रखे वासनों में खट-२ होगी। कभी-२ किसी विषय पर वैपक्ष्य हो जाना साधारण बात है। जीते प्राणियों में वैमनस्य नैसर्गिक है। बात यह है कि मत की विभिन्नता में भ्रातृभाव न छूटे। मां-जाए भाई भी एक दूसरे को मारते हैं, परन्तु माता की गोदी में फिर एक हो जाते हैं। ऐसे ही व्यवहार का प्रण इन मंत्रों में किया गया है।

महाभारत के युद्ध की विधि यही थी। राजपूतों के समर का नियम यही था। दिन को लड़े, रात को भोजन इकट्ठा किया। सन्ध्या समय विरोध कैसा? भीष्म से उपदेश लेने पाण्डव ही तो गये थे।

उपस्थान

उपस्थान का अर्थ है निकट बैठना। यही अर्थ 'उपासना' शब्द का है। इन शब्दों से विशेषतया परमात्मा के निकट होना ग्रहण किया जाता है। सन्ध्या का दूसरा नाम सन्ध्योपासन भी है, जिससे स्पष्टतया सिद्ध है कि सन्ध्या का मुख्य भाग तथा उद्‌देश्य उपासना है। श्री स्वामी जी 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में उपासना की व्याख्या यूँ करते हैं- 'जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने आप को व्याप्य जान के, ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है, ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात्कार करना 'उपासना' कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है।'

इन्हीं शब्दों से आगे आने वाले मंत्रों का महत्त्व समझ लेना चाहिए। सन्ध्या का सार अब आएगा। 'सम्यक्तया ध्यान' आगे लगेगा। पिछले मंत्र सब इसी भाग के लिए तैयारियाँ मात्र थे। अब तक यम नियम का प्रतिपादन हुआ, अब समाधि आई है। आनन्द तब है कि इस स्थल पर पहुंचते ही वस्तुतः समाधि की अवस्था हो।

उपस्थान मंत्र १

ओ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

यजु० ३५/१४

अन्वयः = (वयं) तमसः परि (पृथक) स्वः देवत्रा देवेषु देवं उत्तरं सूर्यं ज्योतिः पश्यन्तः उत अगन्म।

अर्थ - (वयं) हम (तमसः परि) अन्धकार अर्थात् अशांति और पतन से दूर (स्वः) प्रकाश तथा सुखस्वरूप (देवत्रा) प्रकाशमानों में (देवं) अति प्रकाशमान् (उत्तरं) प्रलय के पश्चात् रहने वाले (सूर्यं) सर्वव्यापक (उत्तमं) महान् (ज्योतिः) प्रकाश को (पश्यन्तः) देखते हुए (उत अगन्म) भली-भांति प्राप्त हों।

अब उपासक उस सीढ़ी पर आया जिसके लिए जन्मकाल से परिश्रम था। उसके हृदय में शुभ इच्छा स्फुरित हुई। कैसी मंगलमयी, कैसी सौभाग्यभरी इच्छा! कि अपने प्रियतम परमपिता को एक दृष्टि से देखूँ और उसकी गोद में समा जाऊँ। हैं? देखूँ! देखना दूरस्थ पदार्थों का होता है। यदि अंजन को देखना हो तो उसे आँखों में मत लगाओ। अपनी पुतली जो आँख के अन्दर है, आज तक किसी ने नहीं देखी।

वह परम प्यारा पुतली क्या? उसकी सूक्ष्म दृष्टि के भी अन्दर समाया हुआ है। फिर उसे देखें कैसे? हाँ, भोतिक पदार्थों को देखने को भौतिक आँख और उसे दूरी की भी आवश्यकता है। परमात्मा अखण्ड है, वह बाह्य आँखों से देखा नहीं जाता, उसका दिव्य चक्षु अर्थात् आत्मा के अनुभव द्वारा साक्षात्कार होता है। इसी प्रयोजन से इस मंत्र में 'पश्यन्तः' आया है। 'अगन्म' उससे दूसरी क्रिया नहीं, किन्तु उस निरन्तर विद्यमान, दूर तथा निकट एक रस रहने वाले का देखना और मिलना, छाती से लगाना और गले से लपटना- लो फिर व्यवहार की बातें होने लगीं- एक हैं।

वह सजीला! वह छबीला, वह महान् मनोहर, वह परम प्रभाकर है कैसा? मंत्र में उसे 'तमसस्परि' कहा है। अर्थात् अंधकाररहित, अज्ञान से दूर, अज्ञानियों को प्राप्त न होने वाला। 'स्वः' 'देवत्रा देवं' 'उत्तमं ज्योतिः' अर्थात् पूर्ण प्रकाश। तो क्या वह रात्रि के समय लुप्त होता है और मध्याह्न में प्रदीप्त हो चमकता है? दीपक की बत्ती के ऊपर तो विद्यमान है, परन्तु मूल में नहीं। भोले भाई! भौतिक संसार में निमज्जित रहने वाले प्राणी! 'उत्तमं ज्योतिः' न सूर्य का प्रकाश है, न विद्युत् का आभास! न प्रभात की रंगीली छटा है, न सायंकाल की लाल उषा। वह वेलाओं से ऊपर है और वेलाएँ उससे प्रकाशित हैं। वह मण्डलों का स्वामी है और मण्डल उस से व्याप्त हैं। उसका प्रकाश, धूप तथा परछाईं शशि तथा निशि दोनों में एक रस तथा एक रूप से दीप्तिमान्! उपासकों के हृदयों द्वारा अनुभूत! नास्तिक और मूर्खों से लुप्त! इस प्रकाश का दूसरा नाम आनन्द है जो परमात्मा का स्वरूप है। उससे मिलने की इच्छा और फिर साधनयुक्त इच्छा! सफलता इसके पांव चूमेगी। कृतकार्यता अगुवाई करेगी।

www.thearyasamaj.org

'गिलोय' अमृता का दूसरा नाम है

आयुर्वेद शिरोमणि डॉ॰ मनोहरदास अग्रावत
एन॰डी॰ प्राकृतिक चिकित्सक, दूरभाष : ८९८९७४२०४७

गिलोय को आयुर्वेदशास्त्र में ज्वर की एक उपयोगी औषध मानकर 'जीवन्ती' नाम दिया गया है तथा अमृत के समान गुणकारी होने से इसे 'अमृता' नाम से भी जाना जाता है।

गिलोय वनौषधि है, अनेक रोगों से पीड़ित व्यक्ति को जब कोई दवा ठीक न कर सके तब रामबाण दवा के रूप में गिलोय को दिया जाता है। यह पुराने रोगों को शत-प्रतिशत समाप्त कर देती है। यह भारतवर्ष में सर्वत्र पैदा होने वाली बेल (लता) है, विशेषकर गरम प्रान्तों में अधिक होती है। बहुत विस्तार में वृक्षों पर फैल जाती है, शाखाओं से डोरे के समान हवाई जड़ें निकलकर भूमि की ओर लटकती हैं तथा भूमि के अंदर जाकर जल व भोजन का शोषण कर तने में पत्तों को पहुंचाती हैं, इसके पत्ते पान के पत्तों के समान २-४ इंच के घेरे में गोलाकार नुकीले चिकने पतले गहरे हरे सात में नौ शिराओं युक्त एवं १-३ इंच लम्बे पर्णवृत्त से युक्त होते हैं, गिलोय के मूल तथा काण्ड का व्यवहार औषध के लिए किया जाता है।

हिन्दी में इसे-गिलोय, जो नीम के वृक्ष पर चढ़ती है उसे नीम गिलोय कहते हैं। इस लता को बेहद प्रभावशाली माना गया है, इसकी लता जिस पेड़ पर चढ़ती है, उस पेड़ के गुण भी अपने अंदर समा लेती है। गिलोय के प्रचलित नाम-गुडुची, गुड़बेल, मधुपर्णी, अमृता है। अंग्रेजी में गेलो। लेटिन में-टिनोस्पोरा-कार्डिकोलिया कहते हैं।

उपयोगिता और मान्यता : गिलोय को आयुर्वेदशास्त्र में ज्वर की एक उपयोगी औषध मानकर 'जीवन्ती' नाम दिया गया है तथा अमृत के समान गुणकारी होने से इसे 'अमृता' नाम से भी जाना जाता है। आचार्य चरक ने गिलोय को मुख्यतः वातहर माना है, जबकि बाद के कई आचार्य इसे-त्रिदोषहर, रक्तशोधक, प्रति संक्रामक ज्वरघ्न मानते हैं, विभिन्न अनुपातों में प्रयोग करने पर यह सभी दोषों का दमन कर रक्त शुद्धि करती है।

आचार्य सुश्रुत ने गिलोय को तिक्त रसयुक्त तथा पित्त, कफ शामक कहा है तथा आचार्य वाग्भट्ट के अनुसार यह प्रमेह, मधुमेह तथा सुजाक की परम् औषध है, आचार्य चक्रदत्त के अनुसार यह ज्वर, कुष्ठ तथा श्लीपत की श्रेष्ठ औषधि है। नवीन अनुसंधानों से-अनेक रोगों से रक्षा करने वाली, जीवनी शक्ति को बढ़ाने एवं संरक्षित करने वाली निरापद-प्राकृतिक एंटीबायोटिक औषधि है। यह औषधि कमजोरी एवं वृद्धावस्था दूर करती है।

गुणधर्म : आयुर्वेद मतानुसार-गिलोय काण्ड कटु, तिक्त तथा कषाय रसयुक्त एवं विपाक में मधुर रसयुक्त रसायन, संग्राही, उष्ण, लघु, बलकारक, अग्नि दीपक, त्रिदोष नाशक, आम, तृषा, दाह, प्रमेह, कास-श्वास, पांडुरोग, कुष्ठ, वातरक्त, ज्वर (सभी तरह के), वर्मी, अर्श, मूत्रकृच्छ, हृदयरोग, वात- इन सबका नाश करने वाली होती है। चर्म रोग, क्षय रोग, मधुमेह, अर्श रोग, अम्लता, कर्कटरोग (कैंसर), सुजाक नाशक है।

रासायनिक घटक : आधुनिक शोध में पाये गये घटक निम्नानुसार हैं :- गिलोय की पत्तियों में सबसे ज्यादा प्रोटीन होता है, साथ में कैल्शियम व फास्फोरस की भी अच्छी मात्रा पाई जाती है। पत्ती के प्रमुख रासायनिक घटक इस प्रकार हैं-01.06 प्रतिशत कैल्शियम, 02.50 प्रतिशत इथर से निकला घन सत्व, 17.50 प्रतिशत रेशे, 00.57 प्रतिशत फास्फोरस। गिलोय सत्व में-गिलोइन नाम का-ग्लूकोसाइड, गिलोनिन तथा बर्बेरीज नामक एल्कोलाइड के अलावा गिलोस्टेरॉल, गिलोइनिन, कॉस्मेंथिन, पामारिन हिनोस्पोरिन, टिनोस्पोरिक एसिड, टिनोस्पोरिन, टिनारेस्पेरॉल, प्रोटो-बार्बेरीन, ग्लिस्टोरॉल, अल्कोहल घटक द्रव्य होते हैं। इसके अलावा कोलुंबीन, चारमांथिन और पाल्मारि नामक कटु द्रव्य भी मौजूद होते हैं।

कुछ प्रयोग :

१- ज्वर (बुखार) में- गिलोय प्राकृतिक एंटिबायोटिक औषधि होने से सभी प्रकार के ज्वर जैसे-विषम ज्वर (मोती ज्वर) इसे टाईफाइड बुखार के नाम से ज्यादातर लोग जानते हैं। इंकातरा (एक दिन छोड़कर ज्वर का आना), तिजारी (तीसरे दिन दो दिन छोड़कर ज्वर का आना), हाड़ज्वर (हड्डी में हल्का बुखार बना रहना), मच्छरों के काटने से मलेरिया ज्वर आना इत्यादि सभी ज्वरों में गिलोय (अमृता) का प्रयोग ज्वर मिटाने का सरल उपाय है। किसी बाग या कृषि भूमि पर पेड़ों पर चढ़ी गिलोय बेल (ताजा) मिल जाती

www.thearyasamaj.org

है तो अतिश्रेष्ठ है, नहीं तो बाजार में गिलोय का तना और तने से निकाला गया सत्व हकीमी अत्तार या पंसारी की दुकान से प्राप्त किया जा सकता है। एक इंची पांच टुकड़े तने के लेकर उन्हें कूटकर मिट्टी के बरतन में एक गिलास पानी डालकर शाम को रख दें और सुबह मसलकर उस पानी को छान कर पी लें, तीन चार दिन का सुबह-शाम पीना आपको ज्वर मुक्त कर देगा। 'अमृतारिष्ट' यह आयुर्वेदिक गिलोय से तैयार किया गया 'काढ़ा' है। बाजार से यह आयुर्वेदिक मेडीकल स्टोर से प्राप्त कर प्रयोग में लीजिये। ज्वर पर विजय आपकी हो जाएगी।

२- गिलोय स्वरस : ताजी गिलोय ५० ग्राम को पत्थर पर कूटकर १ लीटर पानी में मिला लें। फिर ६ घंटे बाद मसलकर दोहरे कपड़े से छान लें तथा बोतल में भर लें।

३- गिलोय सत्त्व : गिलोय के तने का ऊपरी छिलका उतारकर १-२ इंच बड़े टुकड़े कर लें, इन टुकड़ों को डंडे से कूटकर १० गुने जल में मिट्टी के बरतन में १२ घंटे तक भिगोएं ताकि फूलकर मुलायम हो जाएँ। फिर हाथ से मसलकर इन टुकड़ों को बाहर निकाल दें, जिससे तने का स्टार्च पानी में घुल जाएगा। शेष बचे पानी को सूती कपड़े से छानकर ३-४ घंटे पड़ा रहने दें। बर्तन के पेंदे में गिलोय स्टार्च जम जाएगा, इसके ऊपर का पानी नितारकर फेंक दें। पेंदे में श्वेत वर्ण का सत्व जमा हो जाएगा, जिसे निकाल कर धूप में सुखा दें। बस सत्व तैयार है।

४- पीलिया (जांडिस) रोग में : गिलोय के पत्ते पीसकर मट्ठे में मिलाकर नित्य पीने से पीलिया दूर होता है।

५- सिरदर्द (आधा शीशी)- सूर्योदय से सिरदर्द का प्रारंभ होना और मध्याह्न काल तक सिरदर्द बढ़ते जाना फिर सायंकाल को कम होना और आधे सिर में दर्द होना। यह विकार अनेक बार पित्त प्रकोप होने पर होता है। इसको मिटाने के लिए गिलोय सत्त्व एक ग्राम, मिश्री मिले दूध या रबड़ी पेड़ा के साथ सूर्योदय से पूर्व या सूर्योदय के समय दे दें। ४ से ७ दिन तक लेते रहने से दर्द का शमन हो जाता है। अधिक दर्द की स्थिति में दोपहर या रात्रि को भी एक ग्राम गिलोय सत्व शहद के साथ दें, निश्चित रूप से लाभ मिल जायेगा।

६- कान के दर्द में : गिलोय को घिसकर पानी मिलाकर गुनगुना (गरम) करके कान में टपकाने से कान का दर्द दूर होता है। कान का मैल भी बाहर निकल जाता है।

७- संधिवात दर्द में- गिलोय का काढ़ा बनाकर उसमें ५ मि ली अरंडी का तेल (केस्टर ऑइल) मिलाकर सेवन करने से जटिल संधिवात रोग दूर होता है।

८- क्षय रोग (टी बी) में- गिलोय सत्त्व के साथ बंशलोचन और इलायची को पीसकर शहद के साथ चटाने से क्षय रोग में बहुत लाभ होता है। गिलोय सत्त्व के ऊपर मिश्री मिला दूध पिलाना चाहिये। इससे कीटाणु नष्ट होते हैं और ज्वर बढ़ना रुक जाता है।

९- श्वास रोग पर - कभी-कभी पित्त प्रकोप होने से विदग्धजीर्ण उत्पन्न होता है, फिर श्वास का दौरा भी होने लगता है, उस अजीर्ण व श्वास को दबाने के लिए गिलोय सत्त्व देने से लाभ होता है।

१०- आमवात में - ताजी गिलोय को केवल दूध के साथ पीसकर ठण्डाई के समान छानकर देने से लाभ होता है।

११- पित्त प्रदर में - स्त्रियों को पित्त प्रधान प्रदर रोग (ल्युकोरिया) होने पर पतला गरम-गरम स्राव होता है। उस पर एक चम्मच गिलोय स्वरस शहद मिलाकर सुबह-शाम दिया जाता है।

१२- दृष्टि की निर्बलता में - गिलोय, हरड़ा, बहेड़ा व आंवला को कूटकर काढ़ा बनाएं (पानी में अच्छा उबालें) फिर छान लें। शहद मिलाकर काढ़ा सेवन करने से थोड़े ही दिनों में नेत्रदृष्टि सबल बन जाती है।

१३- हिचकी में- सोंठ व गिलोय को कूटकर चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को सुंघाने से हिचकी बंद हो जाती है।

१४- श्वेत प्रदर (स्त्रियों को सफेद पानी का स्राव) पर गिलोय तथा सतावरी का क्वाथ (काढ़ा) पिलाने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

१५- दिल की धड़कन पर- गिलोय तथा ब्राह्मी का सेवन करने से दिल की धड़कन नियंत्रित रहती है।

१६- रक्तचाप पर- गिलोय, ब्राह्मी व शंखपुष्पी चूर्ण को आंवले के साथ लेने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है।

१७- प्रसूति ज्वर में - गिलोय सोंठ तथा वृहत्तपंचमूल का काढ़ा प्रसूति ज्वर में लाभदायक है।

१८- गिलोय तथा अश्वगंधा को दूध में पकाकर देने से स्त्रियों का बन्ध्यत्व (बांझपन) दूर होता है।

१९- गिलोय की जड़ को पानी में पीसकर लगाने से कुष्ठ रोग में लाभ होता है।

२०- गिलोय की जड़ का क्वाथ (काढ़ा) पिलाने से सर्पविष उतरता है।

२१- खांसी, अरूचि व भूख की कमी में-गिलोय के रस में पीपल कूटकर मिलाने व शहद मिलाकर पीने से, तिल्ली, यकृत सम्बन्धी रोग दूर होते हैं। भूख खुलकर लगती है। खाँसी मिटती है।

मनोहर आश्रम, स्थान उम्मेदपुरा
पो० तारापुर (जावद)-४५८३३०
जिला नीमच (म०प्र०)

www.thearyasamaj.org

जानते हो!

भारत के प्रथम

–रवीश आर्य

❊भारत के प्रथम राष्ट्रपति– डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
❊भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति – डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
❊भारत के प्रथम अंतरिक्ष यात्री – राकेश शर्मा
❊भारत के प्रथम आई० सी० एस० – सत्येन्द्रनाथ टैगोर
❊प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता– रवीन्द्र नाथ टैगोर
❊प्रथम महिला प्रधानमंत्री – श्रीमती इन्दिरा गांधी
❊प्रथम महिला राज्यपाल–श्रीमती सरोजनी नायडू
❊भारत की प्रथम महिला आई० पी० एस०– किरण बेदी
❊केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में महिला मंत्री– राजकुमारी अमृतकौर
❊प्रथम महिला मुख्यमंत्री– सुचेता कृपलानी (उ० प्र०)
❊माऊंट एवरेस्ट विजेता महिला पर्वतारोही– बछेन्द्री पाल
❊प्रथम महिला पायलट– सुषमा मुखोपाध्याय
❊प्रथम महिला आई० ए० एस० – अन्ना जार्ज (मल्होत्रा)
❊प्रथम दूरदर्शन समाचार वाचिका– प्रतिमा पुरी

हास्यम्

–आस्था गुड्डू

❊एक कंजूस अपने खेत में जा रहा था। अचानक उसके पैर में काँटा चुभ गया। वह बड़ी बहादुरी से काँटा निकालते हुए बोला–भगवान तेरा लाख–लाख शुक्र है कि मैं जूते पहनकर नहीं आया–नहीं तो अच्छे भले जूते में सुराख हो जाता।

❊एक आदमी नकली नोट छापता था। एक बार गलती से पन्द्रह का नोट छप गया। उसने सोचा–शहर में कोई बेवकूफ बनेगा नहीं, इसलिए गाँव में जाकर एक रुपये का सामान खरीदा और चौदह रूपये वापस माँगे। गाँव के दुकानदार ने उसे दो सात–सात के नोट वापस कर दिये।

❊मैनेजर (चपरासी से) यदि तुम मेरी जगह ले लो और मैं तुम्हारी, तो सबसे पहले तुम कौन सा काम करोगे?
चपरासी–मैं अपने चपरासी को फौरन बदल दूँगा।

❊सोमेन्द्र– पिताजी सड़क पार करते समय बहुत डरते हैं।
कीर्ति–अच्छा, तुम्हें कैसे पता?
सोमेन्द्र–वे सड़क पार करते समय मेरा हाथ पकड़ लेते हैं।

❊मरीज–डाक्टर साहब, कभी–कभी तो मुझे सोते समय इतने जोर से खर्राटे आते हैं कि मैं खुद अपनी आवाज से ही जाग जाता हूँ।
डॉक्टर– तो मेरी राय में तुम दूसरे कमरे में सोया करो।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

*बिना अन्न पानी सदा, चलती आठों धाम।
धीरे धीरे बोलती, तुम बतलाओ नाम?
*मोटी सी खाल, शरबत की गली।
चखने में मानो मिसरी की डली।।
*बिन दाना पानी का खाना, एक राह से आना जाना
मंजिल आकर न पहचाने, तीनों सगे पर रहे बेगाने।।
*गोल रूप आए जाए दोपहर में बिगड़ैल,
दिन भर रोज वह चलता, बिन गाड़ी बिन बैल।।
*नाव के भीतर नदी नदी के भीतर नाव,
बिन सोए चलती सदा रात में पाती छांव।।
*धूप लगे सूखे नहीं, छांह लगे कुम्हलाय।
कहो कौन सी चीज है हवा लगे मर जाय।।
*ऊंट जैसे बैठे, मृग सी चलता चाल,
एक जीव ऐसा जिसके पूंछ न बाल।।
*इधर काठ उधर काठ बीच बैठे जागरनाथ।।

घड़ी, तरबूज, घड़ी की सुईयाँ, सूर्य, आंख, पसीना, मेंढक, बादाम

विचार कणिका:

प्रतिभा बहन

❊चालाक और धूर्त व्यक्ति, सीधे और सरल व्यक्ति के सामने बिल्कुल भौंचक्का रह जाता है। –कोल्टन

❊कमजोरी को मैं बुरा नहीं समझता, मूर्खता को मैं माफ कर देता हूँ, परन्तु बेईमानी मुझे तीर सी चुभती है। –जवाहरलाल नेहरू

❊जिन्दगी कितनी ही बड़ी हो, समय की बरबादी से जितनी चाहे छोटी बनाई जा सकती है। –जानसन

❊अच्छी आदतों से शक्ति की बचत होती है, दुर्गुणों से शक्ति की भयंकर बरबादी होती है। –जेम्स एलन

❊अन्याय सह लेने वाला भी अपराधी होता है, यदि वह न सहा जाए तो फिर कोई किसी से अन्यायपूर्ण व्यवहार कर ही नहीं सकता। –टैगोर

❊समय कीमती है, पर सत्य उससे भी ज्यादा कीमती है। –डिजराईली

www.thearyasamaj.org

प्रेरक-प्रसंग

संगति का प्रभाव

'इसे मत मारिये। यह मेरा सगा भाई है। हम दोनों एक ही जाल में फँस गए थे। मुझे एक संत ने ले लिया। उनके यहाँ में भजन सीख गया। इसे एक चोर ने ले लिया। वहां इसने गन्दी बातें सीख लीं।

एक बार बाजार में एक तोता बेचने वाला आया। उसके पास दो तोते थे। उसने एक तोते की कीमत पाँच सौ रुपये और दूसरे तोते की कीमत पाँच पैसे रखी। उसने सबसे कहा- 'अगर कोई पाँच पैसे वाला तोता लेना चाहे तो ले जाए, लेकिन कोई पाँच सौ रूपये वाला तोता लेना चाहेगा तो उसे दूसरा तोता भी लेना पड़ेगा।'

वहाँ के राजा बाजार में आये। तोते वाले की आवाज सुनकर उन्होंने हाथी रोककर पूछा- 'इन दोनों के मूल्य में इतना अन्तर क्यों है?' तोते वाले ने कहा-'यह तो आप इनको ले जायेंगे, तभी आपको पता लगेगा।'

राजा ने तोते ले लिये। जब रात में वे सोने लगे तो उन्होंने कहा कि पाँच सौ रूपये वाले तोते का पिंजड़ा मेरे पलंग के पास टाँग दिया जाय। जैसे ही सुबह चार बजे, तोते ने राम, राम कहना शुरू कर दिया। तोते ने खूब सुन्दर भजन गाये। बहुत अच्छे श्लोक पढ़े। राजा बहुत खुश हुआ।

दूसरे दिन राजा ने दूसरे तोते का पिंजड़ा पास में रखवाया। जैसे ही सुबह हुई उस तोते ने गन्दी-गन्दी गालियाँ बोलनी शुरू कर दीं। राजा को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने अपने नौकर से कहा, 'इस दुष्ट तोते को मार डालो।'

पहले वाला तोता पास में ही सब बातें सुन रहा था। उसने राजा से प्रार्थना की-'इसे मत मारिये। यह मेरा सगा भाई है। हम दोनों एक ही जाल में फँस गए थे। मुझे एक संत ने ले लिया। उनके यहाँ में भजन सीख गया। इसे एक चोर ने ले लिया। वहां इसने गन्दी बातें सीख लीं। इसमें इसका कोई दोष नहीं है। यह तो बुरी संगत का नतीजा है।'

राजा ने उस तोते को मारा नहीं, बल्कि उसे संत के पास भेज दिया जहाँ पर रहकर वह भी अच्छी बातें सीख गया।

सीख : बुरे लोगों की संगत से बचना चाहिए। अच्छे लोगों की संगती करनी चाहिए।

खुशी मिलती है

मेहनत की रोटी मीठी होती है। मेहनत किए बिना खुशी नहीं मिलती।

खेत में किसान मेहनत करने के बाद रूखी रोटी खाकर बड़ा संतुष्ट हुआ और एक लम्बी डकार लेकर वहीं पेड़ के नीचे आराम करने के लिए पसर गया। झाड़ी में बैठा एक सियार उसे शुरू से देख रहा था। उसने पूछा- भैया किसान, एक बात तो बताओ, तुम इतने खुश कैसे हो? किसान ने मुस्कराकर कहा- मैं मेहनत की रोटी खाता हूँ। सियार ने पूछा मेहनत की रोटी कैसे मिलती है। इस पर किसान ने कहा- जमीन तैयार करनी पड़ती है, बीज बोना पड़ता है, पानी देना, फसल की देखभाल, पकने का इन्तजार, कटाई-- ढुलाई, पिसाई--

किसान की बात पूरी होने से पहले ही सियार बोला- इतने सारे काम? तुम्हारे काम तो समाप्त ही नहीं होते। भला कौन इतनी मेहनत करेगा! मुझे ऐसी रोटी नही खानी है। मैं तो चला।

तभी पेड़ पर बैठा तोता बोला- भैया सियार! जो परिश्रम करता है उसे ही संतुष्टि मिलती है। हम भी पेड़-पेड़, डाली-डाली खेतों और मैदानों में दौड़ते फिरते हैं। तब कहीं जाकर मीठा फल खाने को मिलता है। इसी तरह मेंहनत की रोटी भी मीठी होती है। मेहनत किए बिना खुशी नहीं मिलती।

समय बहुत अनमोल साथियो

समय नहीं रुकता है आखिर
हम ही रुक जाते हैं।
समय निकल जाता है तो
फिर पीछे पछताते हैं।।
अभी किया जो किया समझ लो,
कल को क्या होना है।
कल कल करके सचमुच,
हमको समय नहीं खोना है।
समय बहुत अनमोल साथियो
इसकी कीमत जानो।
काम आज का अभी करेंगे,
अपने मन में ठानो।।

सहदेव समर्पित

www.thearyasamaj.org

प्रेरक प्रसंग : सहदेव समर्पित

बुद्धिमान कौन!

किसी गाँव के बाहर एक बुढ़िया रहती थी। एक बार वह रात के अँधेरे में अपनी झोपड़ी में कुछ खोज रही थी। तभी गाँव के ही एक व्यक्ति की नजर उस पर पड़ी। उसने पूछा- माताजी, इतनी रात में अंधेरे में क्या खोज रही हो?

'कुछ नहीं बेटा, मेरी सुई गुम हो गयी है। बस वही खोज रही हूँ।' बुढ़िया ने उत्तर दिया।

'माता जी, अंधेरे में सुई नहीं मिलेगी। प्रकाश में मिलेगी।' कहकर वह व्यक्ति जल्दी से अपने रास्ते निकल गया।

बुढ़िया को उसकी बात समझ आ गई। वह झोंपड़ी से बाहर आकर गली में बिजली के प्रकाश में सुई ढूंढने लगी।

कुछ देर में गाँव के कुछ लड़के आए। बुढ़िया को कुछ खोजते देखकर पूछा- 'माता क्या ढूंढ रही हो?' 'सुई' वे भी सुई खोजने में उसकी सहायता करने लगे।

कुछ देर में और भी लोग इस खोज अभियान में शामिल हो गए और देखते-देखते लगभग पूरा गाँव ही इकट्ठा हो गया।

सभी बड़े ध्यान से सुई खोजने में लगे हुए थे कि तभी एक समझदार वृद्ध ने बुढ़िया से पूछा- 'अरे बहन! जरा ये तो बताओ कि सुई गिरी कहाँ थी?'

'भैया, सुई तो झोपड़ी के अन्दर गिरी थी।' बुढ़िया ने जवाब दिया।

यह सुनते ही सभी बड़े क्रोधित हुए। भीड़ में से किसी ने ऊँची आवाज में कहा- 'कमाल करती हो अम्मा, हम इतनी देर से सुई यहाँ ढूंढ रहे हैं जबकि सुई अन्दर झोंपड़े में गिरी थी, हम सब को मूर्ख क्यों बनाया?

'नहीं, बेटा, मैं क्यों मूर्ख बनाऊँगी? मुझे तो एक व्यक्ति ने कहा था कि प्रकाश में मिलेगी। इसलिए मैं गली के प्रकाश में ढूंढ़ने लगी।'

वृद्ध ने शांत भाव से कहा- 'बुढ़िया पर क्रोध मत करो। तुम भी बराबर के दोषी हो।'

सभी शांत होकर वृद्ध की बात सुनने लगे।

'जो व्यक्ति बिना सोचे विचारे परिश्रम करता है वह कभी अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता। कर्म के लिए भी ज्ञान आवश्यक होता है।'

'जो व्यक्ति बिना सोचे विचारे दूसरों की सलाह मान लेता है, वह स्वयं तो हँसी का पात्र बनता ही है, दूसरों के दु:ख का कारण भी बनता है।'

'और जो व्यक्ति बिना सोचे विचारे वह कार्य करने लगता है जिसको बहुत से लोग कर रहे हैं, केवल भेड़चाल की तरह। उसे भी बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता।'

सभी व्यक्ति वृद्ध की बात को मानकर चुपचाप अपने अपने रास्ते पर चल दिए।

वही मिलता है

एक पिता अपने बेटे के साथ पहाड़ों की सैर पर निकला। अचानक बेटा गिर गया। चोट लगने पर उसके मुंह से निकला- 'आह!'

तुरंत पहाड़ों में से कहीं से आवाज आई- 'आह!!' बेटा अचरज में रह गया। उसने जोर से कहा-तुम कौन हो?

सामने से वही सवाल आया- 'तुम कौन हो?'

बेटा चिल्लाया- 'मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं!' पहाड़ों से जवाब आया- 'मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ!'

अपनी बात की नकल करते देखकर बेटा गुस्से में चिल्लाया- 'डरपोक!' जवाब मिला- 'डरपोक!'

उसने पिता की ओर देखा और पूछा- 'यह क्या हो रहा है?'

पिता ने मुस्कुराते हुए कहा- 'बेटा, जरा ध्यान दो।'

इसके बाद पिता चिल्लाया- 'तुम चैंपियन हो!'

जवाब मिला- 'तुम चैंपियन हो!'

बेटे को हैरानी हुई लेकिन वह कुछ समझ नहीं सका।

इस पर पिता ने उसे समझाया- 'लोग इसे गूंज, इको कहते हैं, लेकिन वास्तव में यह जिंदगी है।'

वास्तव में ये पहाड़ कुछ नहीं बोल रहे। ये वही कह रहे हैं जो तुम कह रहे हो। हमारे प्रति दूसरों का जो व्यवहार है वह हमारे अपने व्यवहार का ही प्रतिबिम्ब है। इस दुनिया में अच्छाई भी है और बुराई भी। सुख भी हैं और दु:ख भी। दुनिया में हमें मिलता वही है जो हम दूसरों को देते हैं।

www.thearyasamaj.org

कैसी थी वह शुभ घड़ी

चन्द्रकवि

कैसी थी वह शुभ घड़ी जब वेद का प्रचार था।
हर तरफ फूला फला सरसब्ज और गुलजार था।

अबतो गलियों में बनारस की फिरैं हैं रण्डियाँ
नाक थी भारत की काशी विद्या का भण्डार था।।१।।

स्वांग भर भर नाचते हैं हाय मथुरा देश में,
योग की तालीम देता जहाँ पर कृष्ण मुरार था।।२।।

क्यों ना फैजाबाद की आंखों से निकलैं आसूँएँ,
निकला जिसकी गोद से श्रीराम सा अवतार था।।३।।

हाय इन्द्रप्रस्थ का सारा नजारा मिट गया,
अब जो है वीरान देखो जो कभी गुलजार था।।४।।

खून करते भाईयों का एक फुट के वास्ते,
राज तक से भरत ने जब कर दिया इंकार था।।५।।

बेटियों को नाईयों के हाथ हां बेचैं थे कब,
यहाँ कभी होता स्वयंवर गुण कर्म अनुसार था।।६।।

बनती थीं सीता सुशीला गार्गी लीलावती,
जब यहाँ पर नारियों को वेद का अधिकार था।।७।।

नाम रखते थे यहाँ गौतम कपिल मनु व्यास से,
कूड़ा छीथर और घसीटे कब हमें स्वीकार था।।८।।

चन्द्र सूनी हो गई सारी पहाड़ीं खाखरें,
ले उड़ा यह आसमां सब इनका जो सिंगार था।।९।।

उठ भक्ति कर भगवान की

लेखक :
महाशय हट्टीसिंह आर्य

उठ भक्ति कर भगवान की सोने का समय नहीं है।।टेक।।

उठता है सवेरे योगी- सोता है देर तक रोगी।
यह कसौटी है पहचान की, सोने का समय नहीं है।।१।।

रोज सवेरे जागे- आलस निद्रा को त्यागे,
बढ़ती है उमर इंसान की, सोने का समय नहीं है।।२।।

कर हवन सवेरे नहा के- ये काम हैं रोजाना के,
कुछ बात सीख ले ज्ञान की, सोने का समय नहीं है।।३।।

सत्संग से बढ़ती बुद्धि- आत्मा की होती शुद्धि,
ये बातें हैं प्रमाण की, सोने का समय नहीं है।।४।।

हट्टी सिंह कर्त्तव्य तेरा- उठा कर रोज सवेरा,
तज दें बातें अभिमान की, सोने का समय नहीं है।।५।।

(महाशय हट्टीसिंह आर्य आर्यसमाज के निराले निस्वार्थ भजनोपदेशक थे। दिन में किसानी करते और रात को आसपास के देहात में प्रचार करते। आप बीकानेर गंगायचा अहीर जिला रेवाड़ी के निवासी थे।)
प्रस्तोता : ईश्वरसिंह आर्य, मस्तापुर

आप को आप करो वश में, शरण बैठकर भगवन की।
इन्द्रिय, घोड़े हों काबू में, बाग खेंच रखना मन की।।

बुद्धिमान सारथी करता, घोड़ों पर कंट्रोल सदा।
निर्बुद्धि मरता फिरता है, इधर-उधर को डोल सदा।।
बुद्धिमान संसार सड़क पर, करता रहे किलोल सदा।
निर्बुद्धि का सारी दुनिया, करती रहे मखौल सदा।।
बुद्धिमान जीत जाते हैं, जंग है जो जड़ चेतन की।।१।।

इन्द्रिय रूपी घोड़ों को निर्बुद्धि खूब दौड़ाता है।
विषय रूप हरी घास देख, घोड़ों का जी ललचाता है।।
लगाम ढीली कर घोड़ों की, खुद भी पीछे जाता है।
फिर पीछे पछतावै, जब परिणाम सामने आता है।।
आप मरे, घोड़ों को मारे, जला आग में विषयन की।।२।।

उपनिषदों में कथा मिली है, रथ है खास शरीर तेरा।
दस घोड़े इन्द्रिय, लगाम मन, राह चलता राहगीर तेरा।।
आठ चक्र और नौ सुराख हैं, पर मार्ग बेपीर तेरा,
फेर बाद में पछतावे, ना लगे लक्ष्य पर तीर तेरा।।
वेदानुसार बितावै जग में मानव घड़ियां जीवन की।।३।।

इन्द्रिय रूपी घोड़ों से, इस रथ को तुझे चलाना है।
यह संसार सड़क है दुर्गम, बड़ा संभल के आना है।।
लज्जा, भय, शंका जिन में, उन कामों को बिसराना है।
अनुशासन में नहीं रहे तो, फिर तेरा कहाँ ठिकाना है।।
'चन्द्रभानु' मन मार यार, संसार बना जड़ विघ्नन की।।४।।

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज सिविल लाइन्स (अलीगढ) का वार्षिकोत्सव

61 दम्पति हुए पूर्णाहुति में सम्मिलित

आर्यसमाज सिविल लाइन्स का वार्षिकोत्सव 12 से 15 अक्टूबर तक संपन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद के आचार्य आनंद पुरुषार्थी प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित थे जिन्होंने 8 सत्रों में चुने हुए वेद मन्त्रों, नीति के कुछ सूत्रों के आधार पर वैदिक सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या की। सायंकालीन सत्रों में आर्यपितृ दिवस, आर्यमातृदिवस, आर्ययुवक दिवस, आर्यराष्ट्र दिवस के नाम से किसी एक कर्मठ व्यक्तित्व को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी उपदेशक महानुभावों ने तत्संबंधी व्याख्या की। आचार्य आनंद जी के आह्वान पर अंतिम दिन 21 यज्ञ वेदियों पर 61 यजमान दम्पतियों की श्रद्धापूर्वक उपस्थिति का ऐतिहासिक अभूतपूर्व नयनाभिराम दृश्य था। सभी यजमानों को वैदिक धर्म से जुड़ने व व्यक्तिगत जीवन में आर्य सिद्धान्तों को तरजीह देने की मार्मिक अपील पुरुषार्थी जी ने की। आचार्य स्वदेश जी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ का भी संगठन शक्ति व ईश्वर विश्वास को लेकर ओजस्वी व्याख्यान एक दिन जनता को सुनने को मिला। अलीगढ़ जनपद के आर्यजन गुरुकुल साधू आश्रम, नगर व ग्रामीण अंचल के सभी आर्यसमाजों से आये थे। श्री चेतनदेव वैश्वानर, आचार्य बुद्धदेव जी, श्री जीवन सिंह, डॉ0 जय सिंह सरोज जी उत्तराखंड, देव नारायण भारद्वाज सहित अनेक विद्वानों का सान्निध्य जनता को मिला। अनेक वर्ष बाद इतनी जागृति देखने को मिली। दिल्ली की श्रीमती कविता रानी जी व एटा के श्री शिवपाल आर्य जी के मधुर भजनोपदेश सभी सत्रों में प्रभावोत्पादक रहे। आर्यवीर दल के श्री पंकज आर्य व उनकी टीम तथा स्त्री आर्य समाज की बहनों ने पूरा साथ दिया।

65 यजमान दम्पतियों ने की पूर्णाहुति

आर्यसमाज भरथना, इटावा का 90 वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। 2 से 6 अक्टूबर तक वेद कथा का कार्यक्रम रखा गया था। दिन में 2 सत्रों में प्रात: सायं यज्ञ भजन प्रवचन होते थे। यज्ञ के ब्रह्मा व मुख्य वक्ता होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी थे जिन्होंने अलग अलग सत्रों में वेद मन्त्रों तथा ऋषि ग्रंथों के आधार पर वैदिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। 15 किलोमीटर दूर नवोदय विद्यालय के लगभग 550 छात्र-छात्राओं (जिनमे कुछ छात्र काश्मीर के भी हैं) के बीच उपदेश का विशेष कार्यक्रम रखा गया जिसका बहुत अच्छा प्रभाव रहा। अंतिम दिन 20 यज्ञ वेदियों पर 65 यजमान दम्पतियों द्वारा पूर्णाहुति का अभूतपूर्व दृश्य था। आचार्यजी के आग्रह पर विशेष व्यवस्था की गई थी जिससे वे लोग भी आये जो आज तक कभी भी आर्यसमाज आते ही नहीं थे। आर्यसमाज के प्रांगण में बैठने की जगह ही नहीं बची थी। सभी को आर्यसमाज मंदिर में प्रति रविवार आने व पञ्च महायज्ञों के करने का संकल्प दिलवाया गया। रात्रि में 12 बजे तक धर्म जिज्ञासु जन बैठे रहकर पूरा प्रवचन सुनते थे। नगर पालिका की अध्यक्षा श्रीमती रंजना यादव जी अपने पतिदेव श्री अजय यादव जी के साथ एक दिन यज्ञ में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में स्वामी प्रभुवेश जी, ओरैया, आचार्य श्री राजदेव जी गुरुकुल एरवा कटरा, पंडित संदीप वैदिक जी, मधुर भजनोपदेशक, मुजफ्फरनगर, श्रीमती क्षमा पुरवार जी, मधुर भजनोपदेशिका आदि विद्वान महानुभावों के सारगर्भित उपदेश भी अलग अलग सभाओं में जनता जनार्दन को सुनने को मिले। अंत में आर्यसमाज की प्रधाना माता जी श्रीमती सीतादेवी आर्या जी ने सबका धन्यवाद किया। **सत्येन्द्र आर्य** मंत्री आर्यसमाज भरथना इटावा

शोक समाचार

आर्य नेता हरप्रसाद पथिक को देहान्त

गाजियाबाद, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जनपद गाजियाबाद के पूर्व मंत्री एवं प्रधान एवं आर्य समाज टीला के प्रधान श्री हरप्रसाद पथिक का गत ६ अक्तूबर को हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० अनिल आर्य ने कहा कि श्री पथिक जी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त थे और युवाओं के चरित्र निर्माण में उनकी गहरी रूचि थी।

उनका अन्तोष्टी संस्कार टीला गॉव के शमशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। उनकी चिता को मुखाग्नि उनके सुपुत्र अजय कुमार आर्य ने दी। आचार्य विष्णुदत्त शास्त्री ने अन्तेष्टि संस्कार कराया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि आदरणीय हरप्रसाद पथिक जी का जीवन सादा व उच्चविचार का था। उन्होंने अनेकों जनपदीय महासम्मेलन अपने जीवनकाल में अपने स्थानीय क्षेत्रों में करा के वेद-प्रचार का महान कार्य किया। जो सदा याद किया जायेगा।

प्रवीण आर्य महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद

www.thearyasamaj.org

'अग्निहोत्र-- पृष्ठ १७ का शेष

में पाठक भी जानते होंगे और लेखक नहीं जानता होगा, जिन्होंने हवन को अपने जीवन का अंग बनाया और वे किसी से पीछे नहीं रहे।

सभी करें तो पूर्ण लाभ-

मनुष्य अपने शरीर के द्वारों से मल ही मल का विसर्जन करता है। उसके मलमूत्र, पसीने आदि से जितना प्रदूषण फैलता है कम से कम उतने के निवारण के लिए तो सुगन्धि फैलाने के लिए उसे हवन करना ही चाहिए। यदि एक ही व्यक्ति हवन करे और ९९ व्यक्ति न करें तो भी उसका लाभ तो है ही, पर यदि सौ के सौ नित्य नियमपूर्वक हवन करने का संकल्प करें तो जहाँ वे स्वयं दुर्गन्धि फैलाने के पाप से बचेंगे, वहीं सामूहिक रूप से पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हानियों से पूर्णतः बचा जा सकेगा।

सात्त्विक बुद्धि, बल और पुष्टि-

वायु शुद्ध होगी तो वह शुद्धि वायु के द्वारा बादलों तक और वायुमण्डल में फैले हुए जल के परमाणुओं तक भी पहुंचेगी। इस प्रकार शुद्ध जल प्राप्त होगा। वायु और जल की शुद्धि से शुद्ध अन्न की प्राप्ति होगी। इस प्रकार शुद्ध अन्न से सात्त्विक बुद्धि, बल और पुष्टि प्राप्त होगी।

हवन से परमेश्वर की भक्ति-

परमेश्वर की भक्ति का उद्देश्य पूर्ण करने के लिए भी यज्ञ सहायक है। भक्ति या सेवा का अर्थ है- प्रियाचरण। हम जिससे प्रेम करते हैं, हम ऐसे कार्य करें जो उसे प्रिय लगते हैं। भाव यह है कि परमेश्वर की भक्ति करनी है तो हम वह आचरण करें जो परमेश्वर को प्रिय है और जो करने की उसने आज्ञा दी है। परमेश्वर न्यायकारी है और वह उसका प्रियाचरण करने वाले को कृपापूर्वक सब सुख प्रदान करता है। 'स्वर्गकामो यजेत्' का अर्थ यही है जो सुख चाहे, यह यज्ञ करे। सुख प्राप्त करने के लिए शुद्ध बुद्धि और विद्या की आवश्यकता है। जब तक शरीर नीरोग, स्वस्थ, पुष्ट न होगा तो विद्या प्राप्ति भी संभव नहीं। शरीर स्वस्थ होगा-शुद्ध वायु, शुद्ध जल और शुद्ध अन्न से। और इनकी शुद्धि होगी हवन से। इसलिए हवन ईश्वर की भक्ति का ही साधन है।

इसलिए सब मनुष्यों को प्रमाद छोड़कर अन्य चार यज्ञों के साथ अग्निहोत्र को अपने घरों में नित्यप्रति अवश्य करना चाहिए।

मनसा परिक्रमा- पृष्ठ २४ का शेष

सर्वशक्तिमान् शब्द की यह व्याख्या कर बुद्धिजीवियों को चमत्कृत कर दिया कि 'वह परमात्मा सृष्टि की उत्पत्ति, पालन तथा संहार क्रिया में न तो किसी और की सहायता लेता है और न अपने सामर्थ्य के विपरीत ही कोई कार्य करता है।' ऐसी सुन्दर व्याख्या दयानन्द के पूर्ववर्त्ती किसी भी आचार्य ने नहीं की थी। ये सब व्यवस्थाएँ परमात्मा की लीलाएँ ही हैं। परमात्मा की लीला, इच्छा, व्यवस्था को हम चाहे अन्य शब्दों में किसी भी प्रकार कहें, किन्तु सृष्टि उत्पत्ति, जीवों को कर्मफल, पुनर्जन्म तथा प्रलय यह सब परमात्मा का ही कार्य है। इसमें उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं, यह शाश्वत नियम है। परिवर्त्तन को देखकर यदि कोई विचित्रता अनुभव हो तो यह अल्पज्ञ जीव परमात्मा की लीला मानकर उसके सम्मुख नतमस्तक हो जाता है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने परमात्मा की इच्छा और लीला के सम्मुख अपनी अल्पज्ञता प्रकट कर उचित ही किया। अन्त में उस महाप्राण, महामानव के उस दिव्य आत्मा को हमारा प्रणाम।

पवित्र दिन यह पाप-- पृष्ठ १३ का शेष

७ जीवनदायिनी वायु अत्यधिक विकृत होती है।

तो फिर यह पाप, नहीं-२ महापाप हम लोग बिना सोचे विचारे क्यों किये जाते हैं।

दीपावली मनाने का उत्तम ढंग :-

१ उत्तम ढंग तो यह है कि सामूहिक रूप से बड़े-२ यज्ञ करें, जिससे हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर सुरक्षित रहे।

२ शुद्ध घी अथवा सरसों के तेल के दीये जलायें।

३ घरों पर प्रकाश करें, उन्हें शुद्ध एवं स्वच्छ करके उनकी सफाई करें। आस पास के क्षेत्र की भी सफाई करें।

४ घर में उत्तम पकवान शुद्ध रीत्यनुसार तैयार करें। ईष्ट मित्रों एवं सम्बन्धियों को आमन्त्रित करें।

५ महापुरुषों के नये चित्र लगायें। संस्थाओं में उनका गुणगान करें। अपने बच्चों सहित उत्तम-२ उपदेश श्रवण करें, करायें।

६ कृषि एवं पशुओं के कल्याणार्थ विविध योजनायें बनायें।

७ गौशाला आदि के लिये दान दें।

८ अनाथों, असहायों, पीड़ितों को दान दें और उनके कल्याणार्थ योजनायें बनायें।

www.thearyasamaj.org

कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशाखोरी कि विरुद्ध

जींद में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

८ दिसम्बर २०१३ रविवार

प्रातः १० बजे से

अनेक प्रसिद्ध आर्य संन्यासी, विद्वान् उपदेशक व नेता सम्मिलित होंगे।

मुख्य कार्यक्रम

●यज्ञ व प्रवचन ●युवा सम्मेलन

●नशाबंदी सम्मेलन ●शहीद सम्मेलन

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

संयोजक

स्वामी रामवेश जी

महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम

३७०५ अर्बन एस्टेट जींद-१२६१०२

दूरभाष : ०१६८१ २४८६३८; ९४१६१ ४८२७८

ओ३म्

M- 98968 12152

रवि स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो० रविन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज मंदिर, रेलवे रोड़, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

ओ३म्

शांतिधर्मी के सदस्य बनने और शुल्क जमा कराने के लिए मिलें।

प्रकाश मेडिकल हाल

पटियाला चौक, जींद-126102

Regd. No. 108463

हर प्रकार की अंग्रेजी, देसी व आयुर्वैदिक दवाईयाँ उचित मूल्य पर खरीदने के लिए पधारिए।

Dr. S.P.Saini

(B.Sc. D. Pharma, आयुर्वेद रत्न)

M- 93549 55283

92552 68315

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-१०-२०१३ को प्रकाशित।

www.thearyasamaj.org

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी द्वारा

आर्य साहित्य पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

आर्य समाज में अनुसंधान, लेखन, प्रकाशन व सम्पादन परम्परा और महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार को प्रगति देने के उद्देश्य से गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (पंजी०) द्वारा स्मृतिशेष चौ० गुगनराम सिहाग, उनकी छोटी बहन स्मृतिशेष गीना देवी व स्मृतिशेष श्रीमती रज्जी देवी नन्दाराम सिहाग की पावन स्मृति में तीन साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये हैं। ये साहित्य पुरस्कार प्रत्येक वर्ष दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य आर्य समाज में सुन्दर, संग्रहणीय, मौलिक हिन्दी, संस्कृत इत्यादि भाषा में अधिक से अधिक गद्य व पद्य साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायक वैदिक साहित्य, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, शोध प्रबंध, भजन संग्रह, काव्य, आयुर्वेद इत्यादि के लेखन, प्रकाशन व सम्पादन को प्रोत्साहन देना है। भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य के तीन साहित्यकारों के लिए तीनों पुरस्कार अलग-२ रूप से आरक्षित हैं। स्वर्गीय लेखक/साहित्यकार की प्रकाशित कृति को उनके पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी व उत्तराधिकारी भी भेज सकते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए कोई भी लेखक, सम्पादक, कवि, शोधकर्ता जनवरी २००६ से दिसम्बर २०१३ तक के मध्य प्रकाशित पुस्तक की एक-एक प्रति, लेखक के दो चित्र, परिचय के साथ अपनी-२ प्रविष्ठियाँ व्यक्तिगत रूप से, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक द्वारा ३१ जनवरी २०१४ तक सोसायटी के कार्यालय में भेज सकते हैं। इसके लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। पुरस्कारों की कोई सीमा निश्चित नहीं है। **कार्यालय पता : सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट, गुगनराम सोसायटी भवन, २०२, पुराना हाउसिंग बोर्ड भिवानी-१२७०२१ (हरियाणा)**

सोसायटी/निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम व मान्य होगा। एक लेखक/सम्पादक कितनी भी रचनायें भेज सकता है। एक लेखक/सम्पादक को उसकी एक से अधिक पुस्तकों पर भी पुरस्कार दिया जा सकता है। पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें लौटायी नहीं जायेगी। प्रत्येक पुरस्कार में सोसायटी की ओर से प्रशस्ति-पत्र व नकद पुरस्कार दिया जायेगा।

सचिव, नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट 9466532152

ओ३म्

फोन : २५२६०६ (दु०)
९४१६५४५५३८ (मो०)

सत्यम स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो. सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

नजदीक सत्यनारायण मंदिर, सुनार मार्किट,
मेन बाजार, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

www.thearyasamaj.org

महिषासुर शहादत दिवस : एक नया तमाशा

कब तक चलेगा विघटन का यह खेल

❑डॉ० विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ drvivekarya@yahoo.com

तथाकथित बौद्धिक समाज की राजधानी कहे जाने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 17 अक्टूबर को महिषासुर शहादत दिवस मनाया गया। यह कार्यक्रम यहाँ पर तीसरी बार आयोजित हुआ है। महिषासुर शहादत दिवस के दिन महिषासुर की तस्वीर रखकर उस पर फूल मालाएँ चढ़ाई गईं। आयोजकों का कहना है कि बंग देश के राजा महिषासुर दलितों, पिछड़ों और आदिवासियों के नायक थे लेकिन इतिहास लिखने वालो ने उन्हें खलनायक के रूप में पेश किया है। महिषासुर दस्यु थे और उनका दमन करने वाली दुर्गा आर्य थी। इस विषय में यह मिथ्या प्रवाद जोर शोर से प्रचारित किया जा रहा है। यह सुर और असुर के मध्य संघर्ष था और सुर दरअसल आर्य थे और असुर अनार्य थे। यहाँ के मूलनिवासियों अर्थात् दलित, पिछड़ी आदि जातियों पर विदेशी आक्रमणकारी आर्यों ने अपने देवी-देवताओं को थोपा है और यहाँ के मूल देवताओं को खलनायक के रूप में चित्रित किया है। अब मूलनिवासी जाग्रत हो चुके हैं, उन्हें विदेशी देवताओं की कोई आवश्यकता नहीं है और वे अपने देवी देवताओं का महिमा मंडन स्वयं कर सकते हैं। इस प्रकार के आयोजन इसी प्रवाद को स्थापित करने के लिए किये जा रहे हैं।

पाठक एक कहावत से परिचित होंगे कि झूठ को हज़ार बार बोलें तो झूठ सच लगने लगता है। पहले तो भारतीय इतिहास के साथ विदेशी इतिहासकारों ने बलात्कार के समान अन्याय किया, फिर उनके मानस सन्तानों ने उनके द्वारा स्थापित झूठी मान्यताओं को इतना प्रचारित प्रसारित कर दिया कि सत्य पक्ष से अपरिचित अपरिपक्व छात्र उनके विषैले प्रचार का शिकार होकर असत्य को सत्य समझने लगते हैं। आर्यों का बाहर से आक्रमण, यहाँ के मूल निवासियों को युद्ध कर हराना, उनकी स्त्रियों से विवाह करना, उनके पुरुषों को गुलाम बनाना, उन्हें उत्तर भारत से कर सुदूर दक्षिण की ओर खदेड़ देना, अपनी वेद आधारित पूजा पद्धति को उन पर थोंपना आदि अनेक भ्रामक, निराधार बातों का प्रचार तथाकथित साम्यवादी लेखकों द्वारा जार शोर से किया जाता है। रामविलास शर्मा जैसे वरिष्ठ साम्यवादियों को इस विचार से असहमत होने के कारण ये अपने खेमे ये बहिष्कृत कर चुके हैं।

पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि वैदिक वांग्मय और इतिहास के विशेषज्ञ स्वामी दयानंद सरस्वती जी का कथन इस विषय में मार्ग दर्शक है। स्वामीजी के अनुसार किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों से लड़कर, जय पाकर, निकालकर इस देश के राजा हुए (सन्दर्भ-सत्यार्थ प्रकाश 8 सम्मुलास), जो आर्य श्रेष्ठ और दस्यु दुष्ट मनुष्यों को कहते हैं वैसे ही मैं भी मानता हूँ, आर्यावर्त देश इस भूमि का नाम इसलिए है कि इसमें आदि सृष्टि से आर्य लोग निवास करते हैं इसकी अवधि उत्तर में हिमालय दक्षिण में विन्ध्याचल पश्चिम में अटक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी है इन चारों के बीच में जितना प्रदेश है उसको आर्यावर्त कहते और जो इसमें सदा रहते हैं उनको आर्य कहते हैं। (सन्दर्भ-स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश-स्वामी दयानंद)।

135 वर्ष पूर्व स्वामी दयानंद द्वारा आर्यों के भारत पर आक्रमण की मिथक थ्योरी के खंडन में दिए गये तर्क का खंडन अभी तक कोई भी विदेशी अथवा उनका अँधानुसरण करने वाले मार्क्सवादी इतिहासकार नहीं कर पाए हैं। एक कपोल कल्पित, आधार रहित, प्रमाण रहित बात को बार-बार इतना प्रचार करने का उद्देश्य विदेशी इतिहासकारों की 'बांटो और राज करो' की कुटिल नीति को प्रोत्साहन देना है। इतिहास में कुछ भी घटा है तो उसका प्रमाण होना उस घटना की पुष्टि करता है। किसी अंग्रेज इतिहासकार ने कुछ भी लिख दिया और आप उसे बिना प्रमाण, बिना उसकी परीक्षा के सत्य मान रहे हैं-- इसे मूर्खता कहें या गोरी चमड़ी की मानसिक गुलामी कहें, यह तो पाठक स्वयं विचार कर लें, पर इससे जनमानस में भ्रम की स्थिति तो उत्पन्न होती ही है, और यही इनका उद्देश्य है।

www.thearyasamaj.org

दीपावली पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Ph. 252157 (F)

भारत सर्जीकल इंडस्ट्रीज

Manufacturers of :
ABSORBENT COTTON WOOL I.P., NON-ABSORBENT COTTON, ZIG ZAG COTTON, COTTON ROLLS

कार्यशाला :
रोहतक रोड़, नजदीक बाईपास, जीन्द-126102 (हरियाणा)

BHARAT COATINGS

2430, M.I.E. Near M.I.E. Police Post
Bahadurgarh (Haryana)

Narender Gupta

www.thearyasamaj.org

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (नवम्बर, २०१३) P.R. No. : PKL 150-A/2011-13

पतंजलि

प्राकृतिक शुद्धता का प्रतीक

सबसे अच्छे सबसे सस्ते

विश्वस्तरीय गुणवत्तायुक्त उत्पाद

पंतजलि चिकित्सालय एवं स्वदेशी केन्द्र

बूथ नं. 156, नजदीक एल.आई.सी., ऑफिस,
हुड्डा ग्राऊंड, जीन्द (हरियाणा)
मो. 9416664728, 9416238417